अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

आचार्यश्री की विभिन्न मुद्राएँ

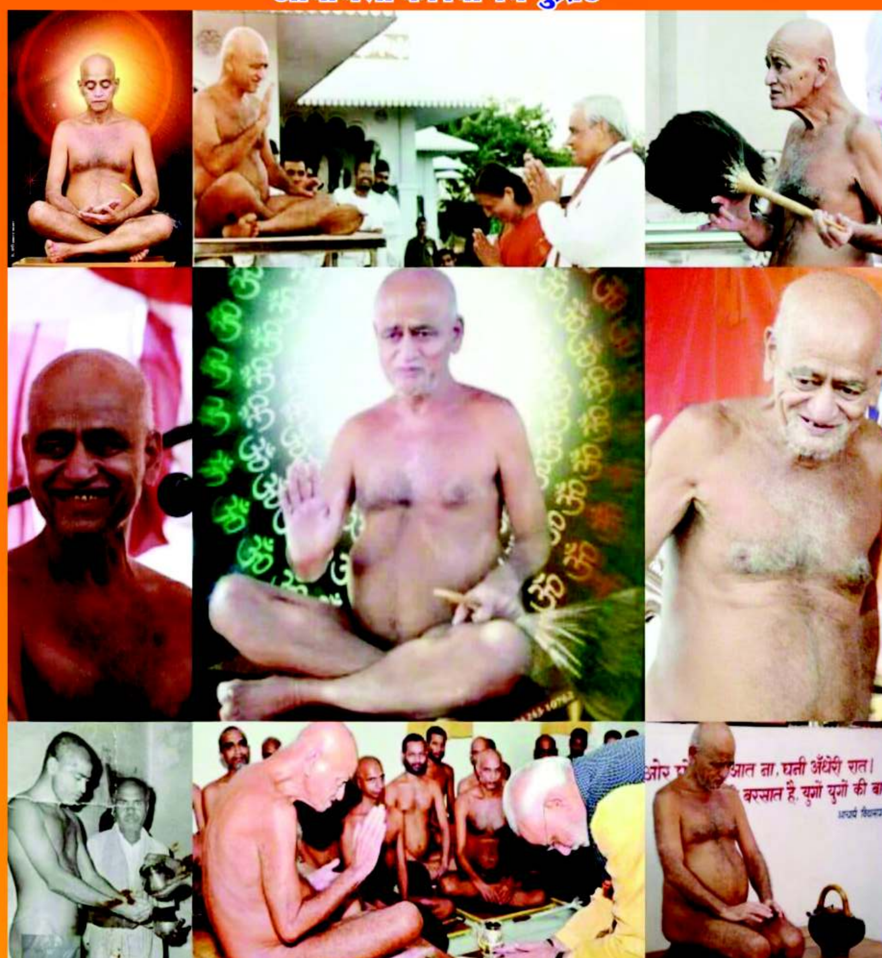

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से आशीर्वाद लेते हुए
पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी एवं वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

वीर निर्वाण संवत् - 2544
अंक : चौवालिस
आषाढ़ कृष्णा, वि.सं. 2075, जून 2018
वर्ष : ग्यारह

आर्यिकाश्री 105 राजितमति माताजी की समाधि का जुलूस।

दीक्षार्थी श्रीमती सुरेखा की गोद भराई करते हुए बेटी रूपल-दामाद संकेत, मुम्बई

दीक्षार्थी श्रीमती सुरेखा शाह की आर्यिका दीक्षा हेतु क्रियायें करते हुए आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज।

आर्यिका दीक्षा समारोह के समय मंचासीन आचार्य संघ एवं उपस्थित जनसमूह।

देवन दास, बैंग्लोर सम्मानित होते हुए।

श्रीमती मायादेवी, सागर सम्मानित होते हुए।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-ग्यारह
अंक - चौवालिस

• परामर्शदाता •
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 9425601161, 7222963457
email : bhav.vigyan@gmail.com
• प्रबंध सम्पादक •
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357
• सम्पादक मंडल •
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
• कविता संकलन •
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल
• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो.: 7024373841
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. सम्पादकीय		2
2. प्रवचन प्रमेय	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	4
3. जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण करो	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	17
4. जीवन क्या है	- डॉ. अनिल कुमार जैन	18
5. ऊँची दुकान और फीका पकवान	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	21
6. पारसचन्द से बने आर्जवसागर	- आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी	22
7. सदाचारयुत शिक्षा में जीवन की उन्नति	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	31
8. आत्म साधना का फल क्या?	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	37
9. समाचार		38
10. सुबह का भूला शाम को वापस आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	39
11. प्रश्नोत्तरी		

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्यों से अत्यावश्यक नम्र निवेदन

धर्मस्नेही सज्जनों, सादर जय जिनेन्द्र !

अपरंच हमारी भाव-विज्ञान पत्रिका के आप सभी सदस्यगणों से नम्र निवेदन है कि जीवन में एक सरलतम उपलब्धि रूप सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धान्तभूषण पदवी हेतु अचूक सुअवसर का पुण्यलाभ अवश्य उठावें क्योंकि आचरणवान ज्ञानियों ने कहा है कि-

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को साधन।
यह परमामृत जन्मजरा मृतु रोग निवारन॥

एतदर्थ धर्मबंधुओं आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित अध्यात्म योगी आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज एवं उनके संघ की भावना एवं पावन प्रेरणा रूप महान करुणा से चयनित यह चार वर्षीय 1600 प्रश्नोत्तरों के स्वाध्याय एवं उससे प्राप्त होने वाली पदवी के लाभ हेतु हम सबके धर्म हितार्थ यह कोर्स रखा जा रहा है।

यह भी ज्ञातव्य रहे कि आचार्य संघ के मार्गदर्शन में विगत नौ वर्षों से अपनी इसी पत्रिका के प्रत्येक अंक द्वारा भाव-विज्ञान परीक्षा बोर्ड, भोपाल के माध्यम से जो धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रकाशित होती जा रही है और इसी तरह गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न होते रहे धार्मिक कार्यक्रमों या शिविर में तथा धार्मिक पाठशालाओं की परीक्षाओं हेतु हम अपनी भगवान महावीर आचरण संस्था समिति द्वारा करीब दस वर्षों से प्रमाण पत्र भी पृथक रूप से भेजते रहे हैं एतदर्थ उसी के विशेष अनुभव द्वारा अब हम आपके लिए यह नये प्रश्नोत्तरी कोर्स के एक नये शुभ अवसर का पुण्य लाभ देने जा रहे हैं जो आप सभी के लिए विशेष शुद्धता और मर्यादा की गरिमा के साथ श्रेष्ठ ज्ञानवर्धन में कारण बनेगा।

इस पत्रिका जून 2018 के अंक सम्बन्धी अन्तिम कवर पृष्ठ पर दिये गये विषय को पढ़कर आप सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धान्त-भूषण पदवी की जानकारी अपने परिचितों तक पहुँचाकर स्वयं तथा अन्य सभी से आवेदन पत्र नि:शुल्क भरवा कर अन्तिम कवर पर दिये गये भोपाल के पते पर अवश्य प्रेषित करें। शुल्क केवल (पोस्टल खर्च हेतु) उन्हें रखा गया है जो भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता न रखते हुए भी प्रश्नोत्तरी रूप सामग्री को हमारे यहाँ से पोस्टल से मंगवाना चाहते हैं।

यह प्रश्नोत्तरी का कोर्स आप सभी के लिए घर बैठे-बैठे प्राप्त होगा जिस कारण आप सभी के लिए किन्हीं बड़े-बड़े शास्त्रों में उत्तर ढूढ़ना आवश्यक नहीं रहेगा। चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी प्रश्न-उत्तर सम्बन्धी रूप सामग्री तथा अंत में दिये गये प्रश्न पत्र को स्वयं पढ़ें एवं अन्य सभी इस कार्य में उत्सुकता रखने वाले भव्यों तक अवश्य पहुँचावें।

आप अपने उत्साह को बढ़ाते हुए पुरुषार्थपूर्वक जिनधर्मी स्वाध्याय करने वाले जो भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन पुरुष, माहिलाओं या युवक-युवतियों से सामूहिक रूप आदि से इस योजना की जानकारी देते हुए यह बतला सकते हैं कि आप लोग इस कोर्स हेतु नि:शुल्क आवेदन पत्र भर देवें जो कि हमारे द्वारा इन्टरनेट आदि की सुविधा से भोपाल प्रेषित करवा दिया जावेगा तथा हम आप लोगों के लिए प्रति तीन महीनों में

एक बार अपनी भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले प्रश्नोत्तर एवं प्रश्नपत्र की कापी ध्यान पूर्वक प्रदान कर देंगे और आप लोग स्वयं ही उसका अध्ययन कर उसकी उत्तर पुस्तिका रजिस्टर के पेजों पर शुद्धता व विनय के साथ तैयार कर (लिखकर) हमें प्रदान करेंगे या आप के द्वारा ही सीधे भोपाल के पते पर भेज दिये जावें तो यह विशिष्ट पुण्य का कार्य होगा।

आज के एकान्त आदि मिथ्यात्व प्रचार के युग में अनेकान्त ज्ञान के प्रचार हेतु कमर कस कर किये जाने वाले आपके इस नि:स्वार्थ सम्यक् प्रयास से हजारों भव्यों का जिनागम सम्बन्धी स्वाध्याय बढ़ेगा और मिथ्यात्व का पलायन होगा तथाहि आबाल वृद्ध जैनागम के सम्यग्ज्ञान के साथ जैनाचार के पालन करने में संलग्न होंगे तब ऐसे प्रयास और धर्मप्रभावना से प्राप्त होने वाली तृप्ति आप सभी के जीवन को मंगलमय बना देगी।

शास्त्रों में वर्णित किया गया है कि आज का विनय सहित अर्जित किया गया थोड़ा-सा भी ज्ञान अगर कारणवश विस्मृत भी हो जावे तो अगले जीवन में जातिस्मरण आदिक से याद आकर वह केवलज्ञान को भी प्राप्त कराकर अर्हन्त पद से मोक्ष पद को भी प्राप्त करा देता है।

एतदर्थ इस चतुर् अनुयोग (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग) रूप ज्ञान की प्रभावना के महान कार्य हेतु हम आपके साथ हैं और आप हमारा भी साथ देते रहें।

अन्त में आप सभी से हमारा यही नम्र निवेदन है कि इस स्वर्णिम अवसर रूप सम्यग्ज्ञान की प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा को अवश्य बढ़ावें और सम्यग्ज्ञानभूषण व सिद्धांतभूषण रूप परमइष्ट उपाधि (डिग्री) के लिए पत्रिका से प्राप्त प्रश्नोत्तरों के स्वाध्याय में अपने उपयोग को तल्लीन करें जिससे तत्काल में अशुभ ध्यानों या अन्य पंचेन्द्रिय के विषयों सम्बन्धी पापों से मन विराम लेगा और ज्ञानोपयोग में कर्म निर्जरा के साथ सातिशय पुण्य का अर्जन होगा तथा गुरु आज्ञा व आशीष हमें मुक्तिपद का वरदान सिद्ध होगा। कहा भी है कि-

विनय बिना विद्या नहीं, विद्या बिन ना ज्ञान।
ज्ञान बिना सुख ना मिले, यह निश्चय कर जान॥

अन्त में आचार्य संघ को सविनय नमोस्तु के साथ आप सभी को सादर जयजिनेन्द्र।

गुरुपदेश को ही जिसने माना आशीष, वही है गुरुचरणारबिंद चंचरीक।

डॉ. अजित जैन, संपादक

★

सांसारिक नहीं, सच्चा सुख प्राप्त करो

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आत्मा को कर्मों से मुक्त कर हम सच्चा सुख प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए ध्यान जरूरी है। महापुरुषों, तपस्वियों व ज्ञानियों ने ध्यान करके ही कर्म बंधन से स्वयं को मुक्त किया है। उक्त बातें आचार्य विद्यासागर जी से दीक्षित आर्जवसागर गुरुदेव ने कहीं। उन्होंने अपनी बातों को और भी स्पष्ट करते हुए कहा कि सच्चा सुख हर क्षण सुख प्रदान करता है, लेकिन सांसारिक सुख प्रारंभ में तो आनंद देता है, लेकिन अंत में दु:ख पहुंचाता है। मुनिराज ने पाप कर्म से दूर रहने का आह्वान करते हुए कहा कि कर्म फल व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है। तुम अच्छा कर्म करो, क्योंकि पाप कर्म से दु:ख, दरिद्रता व अशांति प्राप्त होती है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः

प्रवचन प्रमेय

गतांक से आगे........

-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

तुम जिन मेघ मयूर मैं, गरजो बरसो नाथ।
चिर प्रतीक्षित हूं खड़ा, ऊपर करके माथ॥

(समन्तभद्र की भद्रता 5/7)

जिस समय युग के आदि में वृषभनाथ को केवलज्ञान हुआ, उसी घड़ी वहाँ पर दो और घटनाएं घटी थीं। ''भरत'' प्रथम चक्रवर्ती माना जाता है, उसके पास एक साथ तीन दूत आकर के समाचार सुना रहे हैं। सर्वप्रथम व्यक्ति की वार्ता थी- प्रभो! आपका पुण्य कितना विशाल है, पता नहीं चलता। कामपुरुषार्थ के फलस्वरूप पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। दूसरा कहता है कि- हे स्वामिन्! इसकी बात तो घर तक की सीमित है तथा यह अवसर कई बार आया होगा। अभी तक हम लोग सुना करते थे कि आप छह खण्ड के अधिपति हैं, लेकिन आज आयुधशाला में एक ऐसी घटना घट गई, जैसे आप लोगों में चुनाव के लिए उम्मीदवार के रूप में खड़े होने की सम्भावना पर ''फॅलाने को टिकिट मिल गया'' ऐसा सुनकर जीप बगैरह की भागा दौड़ी प्रारम्भ हो जाती है। ऐसी ही स्थिति वहाँ पर हो गई थी। आयुधशाला में चक्ररत्न की प्राप्ति हुई है, जो कि आपके चक्रवर्ती होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रही है। तीसरा दूत कहता है- यह सब स्वार्थ की बाते हैं, हमारी बात तो सुनो! मैं इन सबसे अद्‌भुत बात बताऊँगा। अर्थपुरुषार्थ करके कई बार इस प्रकार के दुर्लभ कार्य प्राप्त हुए है तथा कामपुरुषार्थ करके कई बार पुत्ररत्न की प्राप्ति हो गई, लेकिन धर्मपुरुषार्थ करके इस जीव ने अभी तक केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं की, पर आज आपके पिताजी मुनि वृषभनाथजी को केवलज्ञान की उपलब्धि हो गई है। इन तीनों से बड़ी बात कौन-सी है भैय्या! आप कहेंगे कम से कम लाल का मुख तो देखना चाहिए पहले। फिर दूसरी। अरे! चक्ररत्न की प्राप्ति हो गई, हुकूमत और सत्ता हाथ में आयी है। **लेकिन यदि सही सत्ता की बात पूछना चाहते हो तो तीन लोक में वही सही सत्ता मानी जाती है, जिस सत्ता के सामने सारी सारी सत्ताएं असत्ताएं हो जायें। केवलज्ञान-सत्ता की वास्तविक सत्ता है, जिसके समक्ष अन्य सत्ताएं कुछ भी नहीं हैं।** तीनों की वार्ता सुनी और उठकर चलने को तैयार हो गये, लेकिन रनवास की ओर नहीं गये और न ही आयुधशाला की ओर, उन्होंने कहा यह सब तो बाद की बातें हैं, सर्वप्रथम तो समस्त परिवारजन को तैयार करो, अष्टमंगलद्रव्य के साथ और हाथी को उस ओर ले चलो जहाँ वृषभनाथ भगवान के समवसरण की रचना हो चुकी है। हमें सुनना है कि भगवान् अब क्या कहेंगे? पिताजी की अवस्था में कुछ और बात कहा करते थे, अब तो कुछ भिन्न ही कहेंगे। अब मुझे बेटा भी नहीं कहेंगे वे, और मैं भी तो उन्हें पिताजी नहीं कहूँगा। अब वो ऐसे बन गये, ऐसे बन गये कि जैसे अनन्तकाल से आज तक नहीं बने थे। आज तक उस दिव्य-दीपक का उदय नहीं हुआ था।

अनन्तकाल से वह शक्ति छिपी हुई थी, केवलज्ञानावरणी कर्म के द्वारा, जो आज व्यक्त हुई है। इस तरह के विचारों में निमग्न होते हुए समवसरण में पहुँचे।

समवसरण में पहुँचते ही भरत चक्रवर्ती ने नमोऽस्तु कर भगवान् की दिव्यध्वनि सुनी। सुनकर वे तृप्त हो गये। ''मै और कुछ नहीं चाहता, मेरे जीवन में यह घड़ी, यह समय कब आयेगा, जब मैं अपने, जीवन को स्वस्थ बनाऊंगा। भगवान् ने स्वस्थ बनने का प्रयास लगातार एक हजार वर्ष तक किया और आज वे स्वस्थ बन गये, आज उसका फल मिल गया।'' मोक्ष-पुरुषार्थ किए बिना, मोह को हटाये बिना, तीनकाल में केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, इसके उपरान्त ही मुक्ति मिलेगी। यह बात अलग है कि किसी को केवलज्ञान होने के उपरान्त अन्तर्मुहूर्त्त में ही मुक्ति मिल सकती है और किसी को कुछ कम पूर्वकोटि तक भी विश्राम करना पड़ता है।

अब दिव्यध्वनि क्यों? या यह कहिए कि केवलज्ञान होने के उपरान्त उनकी क्या स्थिति रहती है, जानने-देखने के विषय में? यह प्रश्न सहज ही उठ सकता है क्योंकि जब श्रेणी में ही निश्चयनय का आश्रय करके वह आत्मस्थ होने का प्रयास करते हैं तो केवलज्ञान होने के उपरान्त दुनियां की बातों को देखने में लगेंगे क्या? ऐसा सवाल तो तीन काल में भी नहीं होना चाहिए ना, लेकिन नहीं। नियमसार में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा है कि केवलज्ञान होने के उपरान्त केवली भगवान् इस तरह जानते हैं, देखते हैं-

जाणदि पस्सदि सव्वं ववहारणयेण केवली भयवं।
केवलणाणी जाणदि, पस्सदि णियमेण अप्पाणं॥

शुद्धोपयोग अधिकार में कहा है कि केवली भगवान् नियम से अर्थात् निश्चय से या यों कहें नियति से, अपनी आत्मा को छोड़कर के दूसरों को जानने का प्रयास नहीं करते। परन्तु व्यवहार से वे स्व और पर दोनों को अर्थात् सबको- सब लोकालोक को जानते हैं देखते हैं।

सर्वज्ञत्व आत्मा का स्वभाव नहीं है। यह उनके उज्ज्वल ज्ञान की एक परिणति मात्र है अतः व्यवहारनय की अपेक्षा से कहा जाता है कि वे सबको जानते हैं। ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध तो वस्तुतः अपना, अपने को, अपने साथ, अपने लिए, अपने से, अपने में जानने-देखने से सिद्ध हुआ करता है, ऐसा समयसार का व्याख्यान है। इस तरह का श्रद्धान रखना-बनाना ही निश्चय सम्यग्दर्शन कहा है तथा अन्यथा श्रद्धान को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते हैं इत्यादि। इसलिए-

सकल ज्ञेय-ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन॥

केवली भगवान् सबको जानते हैं व्यवहार की अपेक्षा से, किन्तु आनन्द का जो अनुभव कर रहे हैं वह किसमें? अपने भीतर कर रहे हैं। यही वस्तुतत्त्व है। णियमेण अर्थात् निश्चय से देखेंगे तो सबको नहीं देखेंगे, सबको नहीं जानेंगे। सबको जानने-देखने का पुरुषार्थ उन्होंने किया नहीं था। यदि सबको देखने-जानने का पुरुषार्थ कर लें तो गड़बड़ हो जाएगा। उनका ज्ञान स्वतन्त्र है, वे स्वतन्त्र हैं और उनके गुण भी स्वतन्त्र हैं। किसी के लिए उनका आस्तित्त्व उनका वैभव नहीं, उनकी शक्ति नहीं। स्वयं के लिए है, पर के लिए नहीं। हमारे लिए

वो केवली नहीं किन्तु स्वयं अपने लिए केवली हैं। हमारे लिए तो हमारा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान है, वहीं साथ-साथ रह रहा है किन्तु केवली का ज्ञान तो हमारे लिए आदर्श होगा। आदर्श से हम भी अपने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान को मिटाकर के केवलज्ञान में परिणत कर सकते हैं, ऐसा आदर्शज्ञान देखकर हमारे भीतर भी आदर्श बनना चाहिए।

छद्मास्थावस्था में उपयोग हमेशा अर्थ-पदार्थ को ही लेकर चलता है। छद्मस्थावस्था का सामान्य लक्षण भी यही बनाना चाहिए कि, जो ज्ञान पदार्थ की ओर मुड़कर के जानता है वह ज्ञान छद्मस्थ का है और जो पदार्थ की ओर मुड़े बिना अपने-आपको जानता है या अपने आप में लीन रहता है वह केवलज्ञान प्रत्यक्ष पूर्णज्ञान है। चाहे मतिज्ञान हो या श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान हो या मन:पर्यय, चारों ही ज्ञान पदार्थ की ओर मुड़कर के जानते हैं। यही आकुलता है। फिर ज्ञान की निराकुलता क्या है ? ज्ञान की निराकुलता यही है कि वह पदार्थ की ओर न मुड़कर के अपनी ओर, अपने में ही रहे। केवलज्ञान ही एक ऐसा ज्ञान है कि जो पदार्थ की ओर नहीं मुड़ता है, मुड़ना ही आकुलता है। स्व को छोड़कर के पर की ओर मुड़ा जाता है और पर को छोड़कर स्व की ओर मुड़ा जाता है। दो प्रकार की मुड़न है। दो प्रकार के मोड़ है। हमारा मोड़ तो दूसरे की होड़ के लिए, पर की ओर मुड़ता है। अपनी वस्तु को छोड़कर जिसका ज्ञान, पर के मूल्यांकन के लिए चला जाता है वह छद्मस्थ का आकुलित ज्ञान, राग-द्वेषी का ज्ञान है केवली का ज्ञान सब कुछ झलकते हुये भी अपने-आप में लीन है, स्वस्थ है।

ज्ञान का
पदार्थ की ओर
ढुलक जाना ही
परम-आर्त
पीड़ा है, दु:ख है
और पदार्थ का
ज्ञान में झलक आना ही
परमार्थ
क्रीड़ा है सुख है... ?

हम दूसरों के समझाने का प्रयास कर रहे हैं। दूसरों के लिए ही हमारा जीवन होता जा रहा है, लेकिन दर्पण जिस प्रकार बैठा रहता है उसी प्रकार केवलज्ञान बैठा रहता है। उसके सामने जो कोई भी पदार्थमालिका आती है तो वह झलक जाती है। यह केवलज्ञान की विशेषता है। सुबह मंगलाचरण किया था जिसमें अमृतचन्द्राचार्य जी ने कहा था देखो ''पदार्थमालिका प्रतिफलति यत्र तस्मिन् ज्योतिष तत् ज्योति: जयतु''- वह केवलज्ञान- ज्योति जयवन्त रहे जिस केवलज्ञान में सारे के सारे पदार्थ झलक जाते हैं लेकिन पदार्थों की ओर ज्योति नहीं जाती। दर्पण पदार्थ की ओर नहीं जाता और पदार्थ दर्पण की ओर नहीं आते फिर भी झलक जाते हैं। तो दर्पण पदार्थ अपना मुख बन्द भी नहीं करता। **ज्ञेयों के द्वारा यदि ज्ञान में हलचली हो जाती है, आकुलता हो जाती है तो वह छद्मस्थ का ज्ञान है ऐसा समझना और तीनलोक के सम्पूर्ण ज्ञेय जिसमें झलक जाएँ और आकुलता न हो, फिर भी सुख का अनुभव करे, वही केवलज्ञान है।** यह स्थिति छद्मस्थावस्था में तीनकाल में बनती

नहीं है। इसलिए छद्मस्थावस्था में केवलज्ञान की किरण केवलज्ञान का अंश मानना भी हमारी गलत धारणा है। क्योंकि केवलज्ञान की क्वालिटी का ज्ञान छद्मस्थावस्था में मानने पर सर्वघाती प्रकृति को भी देशघाती के रूप में अथवा अभावात्मक मानना होगा। जो कि सिद्धान्त-ग्रन्थों को मान्य नहीं है। इस जीव की वह केवलज्ञान शक्ति अनन्तकाल से अभावरूप (अव्यक्त) है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा में एक गाथा आती है-

का वि अपुव्वा दीसदि पुग्गलदव्वस्स एरिसि सत्ती।
केवलणाणसहावो विणासिदो जाइ जीवस्स॥

पुद्‌गल के पास ऐसी अद्‌भुत शक्ति नियम से है, जिस शक्ति के द्वारा उससे जीव का स्वभावभूत केवलज्ञान एक प्रकार से नाश को प्राप्त हुआ है। कर्म सिद्धान्त के ग्रन्थों में कर्म के दो भेद बताए गये हैं। "जैन सिद्धान्त प्रवेशिका" में पं. गोपालदास बरैया ने इसकी परिभाषा स्पष्ट की है, जिसे आचार्यों ने भी स्पष्ट किया है। वे दो भेद हैं- देशघाती और सर्वघाती। केवलज्ञानावरणी कर्म का स्वभाव सर्वघाती आत्मक बताया है। सर्वघाती प्रकृति को बताया है कि वह इस प्रकार होती है जिस प्रकार कि सूर्योदय के समक्ष अन्धकार का कोई सम्बन्ध नहीं, तथा अन्धकार के सद्‌भाव के साथ सूर्य का। अर्थ यह हुआ कि केवलज्ञान की जो परिणति है उस परिणति की एक किरण भी बारहवें गुणस्थान के अन्तिम समय तक उद्‌घाटित नहीं होगी, क्योंकि केवलज्ञानावरण कर्म की ऐसी "अपोजिट" शक्ति है जिसको बोलते हैं सर्वघाती। इससे स्पष्ट हो जाता है कि पुद्‌गल के पास भी ऐसी शक्ति है कि जो बारहवें गुणस्थान में जाने के उपरान्त भी जीव को अज्ञानी घोषित कर देती है। बारहवें गुणस्थानवर्ती छद्मस्थ माने जाते हैं लेकिन वीतरागी इसलिए हैं कि मोह का पूर्ण रूप से क्षय हो चुका है। बड़ी अद्‌भुत बात है, मोह का क्षय होने के उपरान्त भी वहाँ पर अज्ञान पल रहा है, यह भंग प्रथम गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक चलता है। चाहे वो एकेन्द्रिय हो या पंचेन्द्रिय चाहे पशु हो या देव, चाहे मुनि हो या आर्यिका, कोई भी हो बारहवें गुणस्थान तक, जब तक उसका पूर्णविकास नहीं हो जाता तब तक अज्ञान रूप भंग उसके सामने से हट नहीं सकेगा। घतियां कर्मों को नष्ट किये बिना केवलज्ञान का प्रादुर्भाव तीनकाल में भी नहीं हो सकेगा। उस केवलज्ञान की महिमा कहां तक कही जाये। कितना पुरुषार्थ किया होगा उन्होंने, उस पुद्‌गल की शक्ति का संहार करने के लिए! बात बहुत कठिन है और सरल भी है कि एक अन्तर्मुहूर्त्त में आठ साल का कोई लड़का जो कि निगोद से निकल कर आया है, यहाँ पर उसने मनुष्य पर्याय प्राप्त की। आठ साल हुए नहीं कि, वह भी इतना बड़ा अद्‌भुत कार्य अपने जीवन में कर सकता है। इतना सरल है। और कठिनाई को तो आप जानते ही हैं कि 1000 वर्ष तक कठिन तप किया भगवान् वृषभनाथ ने तब कहीं जाकर के केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

जीव के पास भी ऐसी-ऐसी अद्‌भुत शक्तियां हैं जिनसे कर्मों की चित्र-विचित्र शक्तियों को नष्ट कर देता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के आठ कर्म होते हैं। आठ कर्मों में भी 148 भेद और हो जाते हैं, यह संख्या की अपेक्षा है। परन्तु 148 कर्म के भी असंख्यात लोक प्रमाण भेद हो जाते हैं। किसके कर्म किस क्वालिटी के हैं- जाति की अपेक्षा, नाम की अपेक्षा से तो मूल में आठ होते हुए भी उनकी भीतरी क्वालिटी के बारे में हम कोई अन्दाजा नहीं कर सकते क्योंकि हमारा ज्ञान छद्मस्थ/अल्प है। इसीलिए किसी को अन्तर्मुहूर्त्त में केवलज्ञान होना संभव है

और किसी को हजारों वर्ष भी लग सकते हैं।

केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए कई प्रकार की निर्जरा करनी पड़ती है। निर्जरा अधिकार में आचार्यों ने कहा है कि कर्म दो प्रकार के हैं पाप और पुण्य। इनकी निर्जरा किये बिना मुक्ति संभव नहीं, केवलज्ञान नहीं और कुछ भी नहीं। पहले-पहले पाप कर्मों की निर्जरा की जाती है, पुण्य कर्म की नहीं। पाप कर्मों में भी सर्वप्रथम घातियां कर्मों की निर्जरा की जाती है अघातिया कर्मों की नहीं, कुछ सापेक्ष रूप से हो जाती है यह बात अलग है। जैसे कुछ पौधों को बो दिया, लगा दिया, रोप दिया, खाद पानी दे दिया तो उसके साथ घास-फूस भी ऊग आया। तब घास-फूस को उखाड़ा जाता है लेकिन उसके साथ-साथ कुछ पौधे, जो कि रोपे गये थे उखड़ जाते हैं, उनको उखाड़ने का अभिप्राय नहीं होता। वस्तुतः इसी तरह सापेक्षित रूप से कुछ अघातिया कर्मों की भी निर्जरा हो जाती है, की नहीं जाती। **सर्वप्रथम सम्यग्दृष्टि जीव निर्जरा करता है तो पाप कर्म की ही करता है, यह जैन कर्म-सिद्धान्त है। मैंने धवला में कहीं नहीं देखा कि सम्यग्दृष्टि जीव पुण्य कर्म की निर्जरा करता है। बल्कि यह कथन तो धवला में बार-बार आया है कि ''सम्माइट्ठी पसत्थकम्माणं अणुभागं कदावि ण हणदि'' प्रशस्त कर्मों के अनुभाग की निर्जरा सम्यग्दृष्टि तीनकाल में कभी भी नहीं करता, क्योंकि जो बाधक होता है मार्ग में, उसी की सर्वप्रथम निर्जरा की जाती है।** इसी प्रकार हम पूछते हैं कि आस्रव और बन्ध की क्रिया में भी वह कौन-सी पुण्य प्रकृति को बन्ध होने से रोक देता है ? 10 वें गुणस्थान तक की व्यवस्था में जो प्रशस्त कर्म बंधते हैं तो कर्म सिद्धान्त के वेत्ता बताए कि उनमें से कितने, कौन से प्रशस्त कर्मों को रोकता है ? अर्थ यह हुआ कि कर्मों की निर्जरा किये बिना केवलज्ञान नहीं हो सकता, लेकिन कर्मों की निर्जरा का क्रम भी निश्चित है, वह कैसा है ? यह देखने की बड़ी आवश्यकता है विद्वानों को, स्वाध्यायप्रेमियों को और साधकों को। इस क्रम को देखकर के, जानकर के जब हमारा श्रद्धान बनेगा तब ही हमारा श्रद्धान सही होगा, तीन प्रकार के विपर्यासों से रहित होगा। तीन प्रकार का विपर्यास हुआ करता है- एक कारण विपर्यास, दूसरा स्वरूप विपर्यास और तीसरा भेदाभेद विपर्यास। कौन -सा कारण, किसके लिए बाधक है, इसका सही-सही ज्ञान नहीं है वह कह देता है-

जिन पुण्य-पाप नहीं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिनही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके॥

सम्यग्दृष्टि पुण्य और पाप दोनों से परे होता है। न वह पुण्य करता है और न ही पाप। तब कहीं आत्मिक सुख का अनुभव करता है। लेकिन यहां पर ध्यान रक्खो पं. दौलतराम जी संवर भावना का व्याख्यान कर रहे हैं, इसलिए पुण्य और पाप दोनों के कर्त्तव्य से भिन्नता की बात कही है। न कि कर्म-सिद्धान्त की अपेक्षा से। उन कर्मों की बन्धव्युच्छित्ति आदि की अपेक्षा से भी नहीं। आगम का कथन है कि 10 वें गुणस्थान तक पुण्य के आस्रव को रोकने का कहीं भी सवाल नहीं। और दसवें गुणस्थान के ऊपर तो ना पुण्य कर्मों की और ना ही पापकर्मों का साम्परायिक आस्रव होता है। यह सब वहाँ भावनाकार पं. दौलतराम जी के कथन में अविवक्षित है। कारण कि वहाँ मात्र भावना की ही विवक्षा है। कल पण्डितजी जो कह रहे थे कि ''सम्यग्दृष्टि पूर्वबद्ध पुण्य-पाप कर्मों की निर्जरा करता है और नवीन पुण्य-पाप कर्मों को रोक देता है, जो पुण्यास्रव को रोकने का

प्रयास नहीं करता, वह व्यक्ति सम्यग्दृष्टि नहीं है, वह तो अभी विपर्यास में पड़ा है। अब आप ही देख लीजिए कि विपर्यास में कौन है? बात ऐसी है कि जब हम इन (धवलादि) चालीस किताबों का अध्ययन करते हैं तो बहुत डर लगने लग जाता है कि थोड़ी-सी भूल से हम जिनवाणी को दोषयुक्त करने में भागीदार हो जायेंगे। बहुत ही सावधानी की बात है। संभाल-संभाल कर बोल रहा हूं भगवान् यहाँ पर बैठे हैं, दिव्यज्ञानी हैं। पं. दौलतराम जी ने बहुत मार्के की बात कही है ''जिन पुण्य पाप नहीं कीना'' इसका अर्थ हुआ कि साम्परायिक आस्रव 10 वें गुणस्थान तक होता है। साम्परायिक का अर्थ होता है कषाय, जिसके माध्यम से आगत कर्मों में स्थिति और अनुभाग पड़ जाता है। इसके उपरान्त ईर्यापथ आस्रव होता है वह भी एक मात्र सातावेदनीय का। जो दुनियां को साता देता है, उस साता के अभाव में आप तिलमिला जायेंगे। केवल असाता-असाता का बन्ध कभी नहीं होता है, न ही संभव है। क्योंकि साता-असाता दोनों आवश्यक हैं संसार की यात्रा के लिए। पुण्य और पाप दोनों चाहिए। अकेला पुण्य का आस्रव दसवें गुणस्थान तक कभी भी नहीं होता और अकेले पाप का भी नहीं। केवल साता का आस्रव 11-12-13 वें गुणस्थान इन तीनों में होता है। इस कर्मास्रव (पुण्यास्रव) से हमारा कोई भी बिगाड़ नहीं होता। मुक्ति के लिए बिगाड़ फिर भी है, लेकिन केवलज्ञान के लिए यह कर्मास्रव (पुण्यास्रव) बेड़ी नहीं है, नहीं है, नहीं है। क्या कहा? सुना कि नहीं। केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए केवल घातिया कर्मों का नाश करना होता है, घातिया कर्मों में, चाहे मूल प्रकृति हो या उत्तर प्रकृति, कोई भी प्रकृति प्रशस्त प्रकृति नहीं होती। इसलिए **जैनाचार्यों का कहना है कि सर्वप्रथम पाप कर्मों की निर्जरा करके नवीन कर्मों को तू रोक ले, पुण्य तेरे लिए कोई विपरीत काम नहीं करेगा, बाधक नहीं होगा। पुण्य को रखने की बात नहीं कहीं जा रही है, लेकिन निर्जरा का क्रम तो यही होगा कि सर्वप्रथम पाप का संवर करें नवीन पापास्रव को रोकें, पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करें और वर्तमान बन्ध को मिटा दें तो नियम से वह केवलज्ञान प्राप्त करा देगा।** ये भी ध्यान रखना कि जब तक साता का आस्रव होता रहेगा तब तक उसे मुक्ति का कोई ठिकाना नहीं है। केवलज्ञान होने के उपरान्त भी आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त कम पूर्वकोटि वर्ष तक भी वह रह सकता है। वैभाविक पर्याय में और केवल साता का आस्रव होता रहता है। उस आस्रव को रोकने के लिए आचार्य कहते हैं कि तृतीय व चतुर्थ शुक्ल ध्यान आवश्यक है, वे ही भीतर बैठे हुए अघातिया कर्मों का नाश करने में समर्थ हैं। अघातिया कर्मों की निर्जरा करने का नम्बर बाद में आता है, लेकिन घातिया कर्मों की निर्जरा करने का प्रावधान पहले है।

संवर के क्षेत्र में, बन्ध के क्षेत्र में भी इसी क्रम की बात आती है। इसलिए ''जिन पुण्य पाप नहीं कीना'' इस दोहे का अर्थ- मर्म सही-सही वही व्यक्ति समझ सकता है जो कर्म सिद्धान्त के बारे में सही-सही जानकारी रखता है। यदि इस प्रकार की सही-सही जानकारी नहीं रखता हुआ भी वह कहता है कि सम्यग्दृष्टि पाप-पुण्य दोनों प्रकार के कर्मास्रव को रोक देता है, वह भी चतुर्थगुणस्थान में रोक देता है, तो उसे तो अपने-आप ही बन्ध होगा और कोई छोटा बन्ध नहीं, बहुत बड़ा बन्ध माना जायेगा, क्योंकि सामने वाला सोचेगा कि विकल्प तो मिटे नहीं फिर भी यह कह रहे हैं कि पुण्य नहीं होना चाहिए और हो रहा है तो इसका अर्थ है कि मेरे पास सम्यग्दर्शन नहीं है और धर्मात्मा भी नहीं हो सकता जब तक, तब तक कि पुण्य बन्ध को न रोकूं। ऐसा कहने वाले व्यक्ति के पास जब खुद के सम्यग्दर्शन का पतियारा (ठिकाना) नहीं है, तो चारित्र की बात करना ही गलत हो जाएगी।

इस प्रकार यदि श्रद्धान बना लेता है तो दोनों ही संसार की ओर बढ़े चले जा रहे हैं- उपदेश सुनने वाला भी और उपदेश देने वाला भी। जैसा कि कहा है-

''केचित्प्रमादान्नष्टा: केचिच्चाज्ञानान्नष्टा: केचिन्नष्टैरपि नष्टा:''

कुछ लोग प्रमाद के द्वारा नष्ट हो जाते हैं, कुछ लोग अज्ञान के द्वारा नष्ट हो जाते हैं और कुछ लोग नष्ट हो रहे लोगों के पीछे-पीछे नष्ट हो जाते हैं। हम सिद्धान्त का ध्यान नहीं रख पाते हैं इससे बातों-बातों में कितना गलत कह जाते हैं, यह पता भी नहीं चलता। इसलिए बन्धुओं! यदि आप स्वाध्याय का नियम लेते हैं तो दूसरों को सुनाने का विकल्प छोड़कर लीजिए तभी नियम ठीक होगा। दूसरों को समझाने की अपेक्षा से भी नहीं। दूसरों को समझाने चले जाओगे तो लाभ कम होगा, हानि ज्यादा होगी। इसके द्वारा जिनवाणी को सदोषी बनाने में और हाथ आ जायेगा। भीति लगती है कि 40 किताबों में कहाँ-कहाँ पर कैसे-कैसे भंग बनते हैं, यह भी पता नहीं चल पाता और अपनी तरफ से उसमें जजमेंट देने लगते हैं। जबकि हम उसके अधिकारी नहीं होते। इसलिए सोच लेना चाहिये कि चतुर्थ गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि को कौन-कौन से पुण्य कर्म का संवर होता है? 148 ही तो कर्मों की संख्या है, और कोई ज्यादा नहीं है जो कि याद न रह सके। यहाँ दुनियादारी के क्षेत्र में तो हम बहुत कुछ याद कर लेते हैं लेकिन 148 में से चतुर्थगुणस्थान में कौन-कौन से कर्म का आस्रव रुका, संवर हुआ, उनमें प्रशस्त कितने, अप्रशस्त कितने हैं? पाप कर्म कितने हैं, पुण्य कितने हैं, यह याद नहीं रह पाता? यदि इसको ठीक-ठीक समझ लें तो अपने आप ही ज्ञात हो जायेगा कि हमारी धारणा आज तक पुण्य कर्म को रोकने में लगी रही, लेकिन आगम में ऐसा कहीं लिखा नहीं है।

बात खुरई की है जब आगम में निकला कि ''सम्माइट्ठी पसत्थकम्माणं अणुभागं कदावि ण हणदि'' तो देखते रह गये। वाह...वाह! स्वाध्याय का यह परिणाम निकला। आप इस प्रकार के स्वाध्याय में लगे रहिये। ऐसा स्वध्याय करिये, इसे मैं बहुत पसन्द करूँगा। इस प्रकार के सही-सही स्वाध्याय से एक-दो दिन में ही आप अपनी प्रतिभा के द्वारा बहुत-सी गलत धारणाओं का समाधान पा जायेंगे। लेकिन यह ध्यान रखना कि ग्रन्थ आर्षप्रणीत मूल संस्कृत और प्राकृत के हों उनका स्वाध्याय करना। उसमें भाषा सम्बन्धी कोई खास व्यवधान नहीं आयेगा। यदि कुछ व्यवधान आ भी रहे हों तो उसमें स्वाध्याय की कमी नहीं, हमारे क्षयोपशम की, बुद्धि में समझ सकने की कमी हो सकती है। आप बार-बार पढ़िये, अपने आप समझ पैदा होगी, ज्ञान बढ़ेगा। महाराजजी ने एक बार कहा था कि **''एक ग्रन्थ का एक ही बार अवलोकन करके नहीं छोड़ना चाहिए। तो फिर कितनी बार करना चाहिए महाराज? 108 बार करना चाहिए कम से कम, लेकिन वह भी ऐसा नहीं कि ''तोता रटन्त पाठ करो'' किन्तु पहले की अपेक्षा दूसरी बार में, दूसरी की अपेक्षा तीसरी बार में आपकी प्रतिभा बढ़ती रहनी चाहिए तर्कणा पैनी होनी चाहिए, तो अपने-आप शंकाओं का समाधान होता चला जाता है।**

आज हमारी स्मरण शक्ति, बुद्धि 148 कर्मों के नाम भी नहीं जानती और आद्योपान्त ग्रंथ का अध्ययन करना तो मानो सीखा ही नहीं, और हम चतुर्थगुणस्थान में पुण्य-पाप, दोनों कर्मों के आस्रव से उस सम्यग्दृष्टि को दूर कराने के प्रयास चालू कर देते हैं, लेकिन सफल नहीं हो पाते और न आगे कभी सफल हो सकेंगे।

बन्धुओं ! यह बात अच्छी नहीं लग रही होगी। परन्तु माँ जिनवाणी कह रही हैं, मैं नहीं कह रहा हूँ। मैं तो बीच में मात्र भाषान्तरकार के रूप में हूँ। जिनवाणी कह रही है आप सोचिए और पं. दौलतराम जी को सही-सही समझने का प्रयास कीजिए। वे संवर के प्रकरण को लेकर के सर्वप्रथम मुनियों की बात कह रहे हैं कि बारह भावनाओं का चिन्तन कौन करता है ? आप कहेंगे महाराज ! क्या श्रावक नहीं कर सकते ? नहीं। करना तो सभी को चाहिए, बात करने की नहीं। लेकिन भावना फलीभूत किसकी होगी ? ठीक-ठीक किसकी होगी ? तो उमास्वामी ने तत्त्वार्थसूत्र में स्वयं कहा है कि-

''स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः''

भावना सही-सही होना चाहिए। भावना केवल पाठ तक न रह जाए अतः चारित्र को अंगीकार करके परिषहों के साथ बारहभावनाओं का चिन्तन धर्म को समीचीन बनाते हुए समितियों में सम्यक्पना लाते हुए गुप्ति की ओर बढ़ना यही एकमात्र संवर का यह तात्पर्य परिफलित होता है तो बारह भावनाओं का चिन्तन ज्यों ही तीर्थंकरों ने किया, तो वन की ओर चले गए। उस समय ऊपर की ओर से कौन आते हैं ? देवर्षि आते हैं। कौन होते हैं वे देविर्षि ? लौकान्तिक देवों को कहते हैं देवर्षि, बालब्रह्मचारी होते हैं, पंचम स्वर्ग के ऊपर उनकी कॉलोनी बनी है उनमें रहते हैं। द्वादशांग के पाठी होते हैं, सफेद वस्त्र धारण करते हैं, वहाँ कोई भी देवियां नहीं होतीं तथा हमेशा बारहभावनाओं का चिन्तन करते रहते हैं। वे कहाँ से गए हैं ? तो, जाते तो हैं वे मात्र भरत, ऐरावत एवं विदेह क्षेत्र की कर्मभूमियों से, भोगभूमि से कोई नहीं जा सकता वहाँ पर ! महाराज क्या सम्यग्दृष्टि वहां जा सकते हैं ? हाँ सम्यग्दृष्टि ही जाते हैं लेकिन ''अविरत सम्यग्दृष्टि लौकान्तिक देव नहीं हो सकते हैं''। किसी एक व्यक्ति से कल हमने सुना- वह कह रहे थे कि महाराज ! वहां पर रात्रि में चर्चा चल रही थी कि अविरत सम्यग्दृष्टि लौकान्तिक देव हो सकते हैं, लेकिन आप तो कह रहे थे कि मुनि बने बिना नहीं जा सकते हैं। कौन कहता है कि अविरतसम्यग्दृष्टि लौकान्तिक देव हो सकता है ? मैं तो अभी भी कह रहा हूँ कि प्रत्येक मुनि के पास भी लौकान्तिक बनने की योग्यता नहीं। जो रत्नत्रय को पूर्णरूपेण निभाता है वह बारह भावनाओं के चिन्तन में अपने जीवन को खपाता है, महाव्रतों का निर्दोष पालन करता है, इस प्रकार की चर्या निभाते हुए अन्त में वह लौकान्तिक बनता है। तिलोयपण्णत्ति को उठाकर के देख लेना चाहिए। जो व्यक्ति मुनि हुए बिना चतुर्थगुणस्थान से लौकान्तिक देव बनने का प्रयास कर रहा है वह व्यक्ति इस ओर नहीं देख रहा है जो तिलोयपण्णत्ति में कहा गया है। इस प्रकार की कई गलतियां हमारे अन्दर घर कर चुकी हैं। **यदि अज्ञान के कारण कोई बात अन्यथा हो जाए तो बात एक बार अलग है, क्षम्य है। लेकिन तत्सम्बन्धी जिसे ज्ञान भी नहीं और ऊपर से आग्रह है तो उन्हें इस प्रकार के उपदेश या प्रवचन नहीं देना चाहिए। प्रवचन देने का निषेध नहीं है किन्तु जिस विषय के बारे में पूर्वापर ज्ञान हमें सही-सही नहीं है और उसका हम प्रवचन दें तो इसमें बहुत सारे व्यवधान हो सकते हैं। यदि इसमें कषाय और आ जाए तो फिर बहुत गड़बड़ हो जाएगा।** मोक्षमार्ग बहुत सुकुमार है और बहुत कठिन भी। अपने लिए कठोर होना चाहिए और दूसरों के लिए सुकुमार होना चाहिए, किन्तु कषायों की वजह से दूसरों को कठोर बना देते हैं और अपने लिए नरम बना लेना चाहते हैं। लेकिन मोक्षमार्ग तो मोक्षमार्ग है आप की इच्छा के अनुसार नहीं बनने वाला, भैय्या !

भगवान् के दर्शन अच्छे ढंग से करो, उनकी भक्ति करो। भगवान् की भक्ति करने से हमें कुछ नहीं होता, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। आचार्य कुन्दकुन्द जैसे आचार्य भी कहते हैं कि-

अरिहंत णमोक्कारो, भावेण य जो करेदि पयडमदी।
सो सव्वदुक्खमोक्खं, पावदि अचिरेण कालेण॥

जो प्रयत्नवान् होकर के अरहन्तों की भक्ति करता है, भावों की एकाग्रता के साथ करता है तो नियम से वह कुछ ही दिनों में, घड़ियों में सभी दु:खों से मुक्ति पा जायेगा। ''भावेण'' यह शब्द बहुत मार्के का है। अर्थ यह है कि अरहन्त भक्ति करो पर'' हेयबुद्धि से करना, इस पर मन कुछ सोचने को कहता है। कई लोग ऐसा व्याख्यान देते हैं कि भक्ति आदि क्रियाएं हेयबुद्धि से करना चाहिए, लेकिन वह मेरे गले नहीं उतरता है। कई लोग कहते हैं कि महाराज! कम से कम अरहन्तभक्ति करते समय हमारी हेयबुद्धि कैसे हो? हम तो हैरान हो जाते हैं कि भैया! इस प्रकार का प्रश्न तो आपने कर दिया हमारे सामने किन्तु इसके लिए उत्तर मैं कहाँ से ढूढूं? और यदि इसका उत्तर समीचीन नहीं देता हूँ तो मुझे दोष लगेगा। आपको कुछ नहीं कहने पर आप और भी इस तरह की गलत धारणा बना लेंगे। दूसरी तरफ आगम में ऐसा कुछ कहा भी नहीं जिससे आपका समाधान हो सके। अब तो फंदे में पड़ गये हम। किन्तु फिर भी दृढ़ता रहता हूँ कि कौन-सा शब्द कहाँ पर किस रूप में प्रयुक्त होता रहता है? **मैं मंजूर करता हूं कि अरहन्त-भक्ति करते-करते किसी को भी केवलज्ञान नहीं हुआ लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अरहन्त-भक्ति के द्वारा संवर और निर्जरा भी नहीं होती ऐसा कदापि नहीं मानना।** संवर, निर्जरा नियम से होती है। इस संवर-निर्जरा के द्वारा साक्षात्केवलज्ञान नहीं होता। यह बात बिल्कुल अलग है कि जो केवलज्ञान प्राप्ति की भूमिका में है और ''अरहन्त भक्ति (अरहन्त-सिद्ध)'' करता रहेगा तो उसे अरहन्त पद नहीं मिलेगा क्योंकि उसकी स्थिति अभी पराश्रित है।

समयसारादि ग्रन्थों में कहा गया है कि अरे! तू मुनि हो गया, अब शुद्धोपयोग धारण कर, शुद्धोपयोग में लीन हो जा। यदि शुद्धोपयोग में लीन हो जाएगा तो तू भी उसी के समान बन जाएगा जिसकी कि भक्ति कर रहा है।

सुबह प्रार्थना में भजन में कोई सज्जन कह रहे थे कि ''भक्त नहीं भगवान बनेंगे।'' मैंने सुना क्या बोल रहे हैं भजनकार? भैय्या! यह तो बहुत गड़बड़ बात होगी कि जो भक्त तो नहीं बनेगा और भगवान् बनेगा। भगवान् तो बनना है लेकिन ''भक्त बनकर भगवान् बनेंगे,'' ऐसा क्रम होना चाहिए। नहीं तो सारे के सारे लोग भक्ति छोड़कर भगवान् बनने बैठ जायेंगे तो मामला गड़बड़ हो जाएगा। प्रसंग को लेकर अर्थ को सही निकाला जाए तो कोई विसंवाद नहीं किन्तु उसी पर अड़ जाये तो मामला ठीक नहीं। **भक्ति के द्वारा जो केवलज्ञान माने, तो वह समयसार नहीं पढ़ रहा है और समयसार पढ़ते हुए यदि हम यह कहें कि ''भक्ति से कुछ नहीं होता'' तो भी समयसार नहीं पढ़ रहे हैं। आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि-**

मग्गप्पहावणट्ठं, पवयणभत्तिप्पचोचिदेण मया।
भणियं पवयणसारं पंचत्थियसंगहं सुत्तं॥

प्रवचन भक्ति के द्वारा प्रेरित हुई मेरी आत्मा ने इस प्रवचन (आगम) के साररूप पंचास्तिकाय संग्रह सूत्र

को कहा। मार्ग की प्रभावना को दृष्टि में रखकर ऐसी भावना उद्‌भूत हुई। भक्ति से ओत प्रोत होकर जिनवाणी की ऐसी सेवा करने का ऐसा भाव यदि इस भूमिका में नहीं होगा तो कौन-सी भूमिका में होगा? क्या सप्तम भूमि में होगा? नहीं होगा। करुणा से युक्त हृदय वाले ही भक्ति कर सकते हैं। यदि कुन्दकुन्दाचार्य की अरहन्त भक्ति-श्रुतभक्ति नहीं होती तो यह जिनवाणी भी हमारे सामने नहीं होती। आप भी तो बोलते हैं कि ''तो किस भांति पदारथ पांति, कहां लहते रहते अविचारी'' हाँ...हाँ! जिनवाणी-भक्ति में क्या मार्मिक बात कही है, कि हमारा अस्तित्व कहां, यदि यह जिनवाणी न होती तो? किसी उर्दू शयर ने भी कहा है उसे भी याद ला रहा हूं, बहुत अच्छी बात कही- उनकी ये दृष्टि हो या न हो, लेकिन मैंने तो इसका इस प्रकार अर्थ निकाला है-

नाम लेता हूँ तुम्हारा लोग मुझे जान जाते हैं।
मैं एक खोई हुई चीज हूँ जिसका पता तुम हो॥

मेरा कोई ''एड्रेस'' नहीं, पता नहीं। अगर कुछ है तो तुम ही हो! तुम्हारी शरण छूट गयी तो हमारे लिये कोई शरण नहीं भगवान्।

''अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम'' अरहंते सरणं पव्वज्जामि। हे भगवन्! (पंचमरमेष्ठी) आपके चरण कमलों की शरण को छोड़कर के कौन-सी मुझे शरण है? भगवान् की भक्ति करते हुए यदि हेयबुद्धि लाने का प्रयास करोगे तो बन्धुओ! ध्यान रक्खो ''शुद्धोपयोग की भूमिका आपको नहीं मिलेगी और अशुभोपयोग की भूमिका छूटेगी नहीं''। भक्ति शुभोपयोग में हुआ करती है लेकिन शुभोपयोग के द्वारा केवल बन्ध होता है, ऐसा नहीं है, शुभोपयोग के द्वारा संवर-निर्जरा भी होती है। सर्वप्रथम प्रवचनसार में आत्मख्याति लिखते हुए अमृतचन्द्राचार्य ने गाथा की टीका में लिखा है कि-

एसा पसत्थभूदा समणाणं वा पुणो घरत्थाणं।
चरिया परेत्ति भणिदा ताएव परं लहदि सोक्खं॥

यह प्रशस्तभूत जो श्रावकों की अरहन्त-भक्ति, दान और पूजादि रूप प्रशस्तचर्या है इसके द्वारा ''क्रमत: परमनिर्वाणसौख्यकारणत्वाच्च मुख्य:'' ये शब्द अमृतचन्द्राचार्य के हैं। जयसेनाचार्य जी ने इसका और खुलासा किया है। सर्वप्रथम इन अध्यात्म ग्रन्थों में क्रमत: शब्द का प्रयोग किया है तो अमृतचन्द्राचार्य जी ने ही। जो व्यक्ति (अमृतचन्द्राचार्य) क्रमत: अर्थात् परम्परा से परम निर्वाण के सुख को प्राप्त करने के लिए सरागचर्या और अरहन्त-भक्ति को कारण मानते हैं तो उसके लिए ''एकान्त से संसार का ही कारण मानना ऐसा कह देना, आचार्य अमृतचन्द्राचार्य को दुनिया से अपरिचित कराना है।''

शुद्धोपयोग के साथ कुछ भी आस्रव नहीं होता, बिल्कुल ठीक है। परन्तु शुभोपयोग के द्वारा केवल आस्रव ही होता है, ऐसा नहीं है। इसलिए तो अमृतचन्द्राचार्य जी ने ये शब्द दिये ''क्रमत: परमनिर्वाणसौख्यकारणत्वाच्च मुख्य:'' और कुन्दकुन्द भगवान् क्या कहते हैं ''ताएव परं लहदि सोक्खं'' अर्थात् उसी सरागचर्या के द्वारा क्रमश: निर्वाण की प्राप्ति होती है। यहाँ पर यदि मुनि कहे कि हम भी ऐसा ही करें, तो आचार्य कहते हैं कि- बाबला कहीं का! तुम्हारी शोभा इसमें नहीं आती, तुम्हारी तो भूमिका शुद्धोपयोग की है। झटके से बैठ जा, और आत्मा का ध्यान कर ले। तुम्हें क्रमश: नहीं ''साक्षात्'' की भूमिका है। लेकिन

वर्तमान में बन्धुओं ! इस विवक्षा को नहीं समझोगे तो उस भक्ति को भी खो दोगे और उधर भी कुछ नहीं मिलेगा, तब कहां रहोगे ? इस सब अवस्था को देखकर भगवान् कुन्दकुन्द को कितना दु:ख होगा, अमृतचन्द्राचार्य को कितना दु:ख होगा ? उन्होंने प्रयास किया लिखने में, टीका करने में और हम अर्थ निकालने वाले ऐसा अर्थ निकाल रहे हैं ? बेचारी इस भोली-भाली जनता का क्या होगा ? इसलिए आचार्यों ने टीका के ऊपर टीकाएँ, कुंजी, नोट्स, ये वो, सब कुछ लिखे हैं । लेकिन टीका की कीमत, कुंजी की कीमत तब तक ही है जब तक मूल है, ताला है, मूल नहीं तो टीका, कुंजी का बड़ा-सा गुच्छा अपने पास रख लें तो भी कुछ (कोई भी) कीमत नहीं ।

आज किताब का तो अध्ययन कोई करता नहीं और कुंजियों के द्वारा पास होने वाले विद्यार्थी बहुत हैं । उन विद्यार्थियों को देखकर ऐसा लगता है कि जब ताला नहीं मिलेगा तो कुंजी का प्रयोग कहां करेंगे ये लोग ? उस कुंजी की कीमत तब है जब मूल किताब में कहां पर क्या लिखा है, इसको देखने में 'की' (Key) लगा दो तो ठीक है, लेकिन जब नवम्बर और अप्रेल आ जाता है उस समय कॉलेज के भी विद्यार्थी पढ़ाई प्रारम्भ करते हैं तो पास कैसे होंगे ? ''की'' पढ़कर ही जैसे भी हो वैसे पास हो जायें, बस यही सोचते हैं । कदाचित् वे पास हो भी जाएं लेकिन यहाँ पर ऐसा नहीं चलेगा भैय्या ! यहाँ पर पूरा का पूरा प्रयास करने की आवश्यकता है ।

आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने अरहन्त-भक्ति में तो विशेष रूप से कमाल किया है, वे कहते हैं-

न पूजयार्थस्त्वयि वीतारागे न निन्दया नाथ! विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरितांजनेभ्यः ॥

हे भगवन ! हम आपकी भक्ति कर रहे हैं, स्तुति कर रहे हैं और आपको स्मरण कर रहे हैं, इससे आपका कोई भी प्रयोजन नहीं है, क्योंकि आप तो वीतरागी हैं । हे भगवन ! कोई भी आकर, आपकी निन्दा करे, तो भी आपको कोई प्रयोजन नहीं, क्योंकि आप वीतद्वेषी हैं । आपके चरणों में भक्ति कर रहा हूँ मैं, इससे आपको तो कोई लाभ-प्रयोजन नहीं किन्तु मेरा ही मतलब सिद्ध हो जाता है, कारण कि अभी तक बिगड़ा रहा, अब आज आपकी भक्ति के माध्यम से सुधर जाऊंगा । इसके लिए आप मना भी नहीं करते हैं । उन्होंने पांच कारिकाओं के द्वारा वासुपूज्य भगवान् की स्तुति करते हुए मात्र पूजा का ही वर्णन किया है । वे कहते हैं कि-

पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य, सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ।
दोषाय नालं कणिकाविषस्य, न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ॥

हे भगवन ! आपकी स्तुति, पूजा पाठ आदि करते-करते कोई श्रावक दोष का भागीदार नहीं होगा, सावद्य पूजन होने पर भी । क्योंकि पूजन के द्वारा इतना फल मिलता है- कर्मों की निर्जरा होती है कि क्या बताऊँ ? और उसके साथ-साथ, यदि कुछ कर्मों का बन्ध भी हो रहा हो तो वह उसके लिए बाधक नहीं होगा । दोष के लिए सिद्ध नहीं होगा । क्या उदाहरण दिया है ? समुद्र है, वह भी अमृत का, उसमें यदि विष की एक कणिका डाली जाय तो वह समुद्र को किसी भी प्रकार से विकृत नहीं बना सकती । मैं पूछना चाहता हूँ कि बड़ी-बड़ी सिटियों से लोग आये होंगे यहां पर । वहाँ पर आप सबकी दुकानें तो होंगी, भले ही घर की न हो, किराये से ले रखी हो । माल तो आपका ही होता है, मकान आपका नहीं लेकिन आप चाहते होंगे कि दुकान चकराघाट पर या तीन बत्ती

पर खुल जाए। ताकि हमारी दुकान चौबीसों घण्टों चलती रहे, ग्राहकों का ताता लगा ही रहे। लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि वहां पर दुकान मिलेगी कैसे? जो मांगे वह देने को तैयार हैं, हम दस लाख की भी पगड़ी देने को तैयार हैं, लेकिन मिल तो जाय कम से कम। मानलो मिल गई और धड़ाधड़ चलने भी लगी, मालामाल हो गये। तो मालूम है किराया लेने वाला (मालिक) क्या कहता है कि आपको किराया और बढ़ाना होगा? तब आप कहते हैं– बढ़ाओ कोई बात नहीं ले लो और ले लो, एक माह हुआ नहीं कि 29 तारीख के दिन ही निकाल करके रख देते हैं। आया नहीं कि दे दिया। क्योंकि गड़बड़ किया तो दुकान खाली करनी पड़ेगी, तब तो मुश्किल हो जाएगा। इसलिए सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं। दुकान अच्छी चल रही है। अपनी गांठ का देना होता तो थोड़े ही निकालते। जो आ रहा है उसी में से थोड़ा सा दे दिया। यह स्थिति होती है। जिसकी निजी दुकान नहीं है, उसकी यह बात है, तब तो जिसकी दुकान भी घर की है जिसको कुछ भी, एक पाई भी न देना पड़े खुद का घर, खुद की दुकान, नौकर भी नहीं, सब कुछ स्वयं करते हैं तो मालामाल हो जायेंगे। देने की आवश्यकता ही नहीं, मात्र लेना ही लेना है।

इसी प्रकार अरहन्त-भक्ति में, पूजा में लाभ ही लाभ है। अत: भक्ति आदिक धार्मिक कार्य ''हेयबुद्धि'' से नहीं किये जाते किन्तु आचार्यों ने कहा है ''परमभक्तया एव अरहन्तभक्ति कुरु'' परम भक्ति के द्वारा अरहन्त भक्ति करो किन्तु उस भक्ति के द्वारा जो भी पुण्यबन्ध होता है, उस पुण्यबन्ध के उदय का जब फल मिलेगा तब उसमें आकांक्षा- रागद्वेष- हर्षविषाद नहीं करना। पं. दौलतराम जी कहते हैं कि-

पुण्य पाप फल मांहि हरख विलखो मत भाई।
यह पुद्गल परजाय उपज विनसे थिर नाई॥

क्या कहते हैं वे? पुण्य और पाप के फल के काल मैं न तो हर्ष होना चाहिये, न ही विषाद। किन्तु संसारी प्राणी का बिना इसके (हर्षविषाद के) चल नहीं सकता। (सांसारिक विषयों के) फल के लिए **जो व्यक्ति पुण्य करता है उसका वह पुण्य पापानुबन्धी पुण्य है और जो व्यक्ति अरहन्त भक्ति संवर और निर्जरा के निमित्त करता है, कर्मक्षय के लिए करता है, वही सार्थक है।**

शुद्धोपयोग की भूमिका नहीं है तब क्या करूँ? तो आचार्य कहते हैं कि चिन्ता मत कर बेटा! मैं कह रहा हूँ रास्ता यही है तेरे लिए ''क्रमत: परमनिर्वाणसौख्यकारणत्वाच्च मुख्य:''। इस भव में नहीं तो ना सही, किन्तु मिलेगा तो, परम आह्लाद की प्राप्ति होगी नियम से। सभी को आह्लाद पहुँचाने का प्रयास करो, जिससे व्यक्ति अरहन्त भक्ति करने लग जायेगा ऐसा प्रवचन दीजिये, ऐसा नहीं कि ''भुक्ति की भक्ति'' शुरु कर दे। ''अर्हन्त भक्त'' बनेगा तो नियम से वह मुनि बनेगा और अपनी आत्मा में स्वस्थ होगा। यह सब यदि करना चाहते हो तो नियम से अच्छे ढंग से अरहन्त भक्ति करना चाहिए।

अरहन्त भक्ति करते-करते प्राण निकल जाये, ऐसा आचार्य समन्तभद्र और कुन्दकुन्द भगवान का कहना है। सल्लेखना के समय पर जिस व्यक्ति के मुख से अरहन्त भगवान का नाम निकलता है वह बहुत ही भाग्यशाली है। जिसके मुख से ''अरहन्त'' नाम भी नहीं निकलता है, उसका तो कर्म ही फूट गया, खोटा है। महान बड़भागी होते हैं वे, जो जीवन पर्यन्त उपाध्याय परमेष्ठी का काम करते हैं और अन्त में भी

''णमोकारमन्त्र'' दूसरों को सुनाते जाते हैं, बहुत भाग्य की बात है। ''अरहन्त-सिद्ध'' मुख से नहीं निकलता किन्तु कहते हैं- ''हाय रे! जल लाओ, भीतर तो सभी कुछ जला जा रहा है''। जीवन भर समयसार भी पढ़ लो गोम्मटसार भी रट लो, प्रवचनसार के प्रवचन भी कर लो लेकिन जब अन्तसमय प्राणपखेरू उड़ने लग जाते हैं तो ''अरहन्त'' कहते नहीं पाये जाते, ऐसे भी कई उदाहरण आगम में दिये गये हैं। 48 मुनियों को वैय्यावृत्ति में लगाया जाता है और बार-बार कहा जाता है कि ''आपके माध्यम से हमें मार्ग मिला है'' और आप कह रहे हैं कि जल लाओ, भोजन लाओ। रात तो देखो, अपनी अवस्था को भी देखो, आप किस अवस्था में हैं और यह क्या कह रहे हैं। पूर्व की याद करो! नरकों की याद करो, जहां-

सिन्धु नीर ते प्यास न जाए तो पण एक न बूंद लहाय।

यह प्यास, भूख तो अनन्तकाल से साथ दे रही है। अब तो केवली भगवान की बात सुनिए-घबड़ाकर नहीं, अरहन्त-भक्ति को याद रखो, आज भी नियमपूर्वक विधिपूर्वक सल्लेखना करने वाला उत्कृष्ट साधक कम से कम 2-3 भव और जघन्य साधक अधिक से अधिक 7-8 भव में मोक्ष जाता है।

पं. दौलतराम जी कहते हैं कि यदि तू मुनि नहीं बन सकता तो कम से कम श्रावक के व्रत तो पालन कर/धारण कर। **दो ही धर्मों का व्याख्यान शास्त्रों में आता है- एक अनगार, दूसरा सागार। तीसरा कोई धर्म नहीं है। धर्मशाला है। आप कहीं भी चले जायें, दो ही धर्म मिलेंगे, दोनो में चलने को कहा है।** एक बात और कहना चाहूंगा कि अमृतचन्द्राचार्य जी ने पुरुषार्थसिद्धयुपाय में कहा है आप लोग बहुत पढ़ते हैं उसको, जब भी उपदेश देओ तो सर्वप्रथम मुनि बनने को उपदेश देना, बाद में श्रावक धर्म का'' क्योंकि सामने वाला यदि मुनि बनने की इच्छा से आया है और आप उसे गृहस्थाश्रम के योग्य धर्म का उपदेश देंगे तो दण्ड के पात्र होंगे। केवल एक धर्म का कभी भी वर्णन नहीं होना चाहिए। **मात्र सम्यग्दर्शन कोई धर्म नहीं है किन्तु सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र, तीनों मिलने पर ही धर्म बनते हैं, ऐसा आचार्यों का कहना है।**

बन्धुओं! या तो श्रावक बनो या मुनि बनो, तीसरा कोई उपाय नहीं है। यदि धर्म का पालन नहीं कर सकते तो, भाव तो रक्खो मन में कम से कम। इस प्रकार की भावना होना भी महादुर्लभ है।

कृष्णजी के सामने समस्या आ गई। वे कह देते हैं प्रद्युम्न आदि सब लोगों को कि चले जाओ, सबको हमारी तरफ से छुट्टी है मुनि बनने की, दीक्षा लेने की। बेटे ने कहा- आप भी चलेंगे पिताजी! मेरी भावना नहीं हो रही है। क्यों नहीं हो रही है पिताजी? कितने मार्के की बात है देखो, ''**सिद्धान्त कहता है कि जिस जीव को मनुष्यायु, तिर्यंचायु या नरकायु का बन्ध हो चुका है उसको कभी संयम लेने की भावना तक नहीं होती। लेकिन वह सम्यग्दृष्टि है तो दूसरे को दीक्षा लेने में कभी भी व्यवधान नहीं डालेगा।'' जो व्यक्ति शिक्षा-दीक्षा का निषेध करता है वह व्यक्ति नियम से संयम के प्रतिपक्षी होने के कारण मिथ्यादृष्टि है।** बन्धुओं! यह ध्यान रक्खो, खुद मोक्षमार्ग पर नहीं चल सकते तो कोई बात नहीं किन्तु ''तुम चलो बेटा, तुम चलो बेटा, तुम चले जाओ। हम बाद में आ जायेंगे, जब कभी हमारी शक्ति आ जायेगी तब, ऐसा प्रोत्साहन तो देता है।'' मैं नहीं चल रहा हूँ इसलिए तुम कैसे आगे पहुँच सकते हो'' इस घमण्ड से दूसरों के मार्ग में बाधक का कार्य नहीं करो, ''आज मोक्षमार्ग पर कोई नहीं बढ़ सकता'' ऐसा भी कभी मत कहना, क्योंकि नियमसार

की एक गाथा है आचार्य कुन्दकुन्ददेव की– ''अनेक प्रकार के भाव होते हैं, अनेक प्रकार के कर्म होते हैं, अनेक प्रकार की उपलब्धियां होती हैं। इसलिए आपस में इस प्रकार का संघर्ष कषाय करके ''स्व'' और ''पर'' के लिए कभी भी ऐसे बीज मत बोओ, जिसके द्वारा विषफल खाना पड़े। और नरक–निगोद आदि गतियों में जाना पड़े।

दिव्यध्वनि में भगवान ने दो ही धर्मों का वर्णन किया है और सम्यग्दर्शन के साथ दोनों धर्म हुआ करते हैं। इनमें से एक परम्परा से मुक्ति का कारण है और एक साक्षात्। मुनिधर्म साक्षात् मुक्ति का कारण है और श्रावकधर्म परम्परा से, परन्तु आज तो दोनों ही धर्म परम्परा से हैं क्योंकि आज साक्षात् केवलज्ञान नहीं होगा। इसलिए इस सत्य को, इस तथ्य को सही–सही समझकर के अपने मार्ग को आगे तक प्रशस्त करने का ध्यान रखिये। क्योंकि–

ज्ञान ही दुःख का मूल है, ज्ञान ही भव का कूल।
राग सहित प्रतिकूल है, राग रहित अनुकूल॥
चुन-चुन इनमें उचित को, मत चुन अनुचित भूल।
सब शास्त्रों का सार है, समता बिन सब धूल॥

''अहिंसा परमो धर्म की जय'' (केसली 10–3–86 कैवल्यलब्धि वेला)

निरन्तर...

जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण करो – आचार्य श्री विद्यासागर जी

आचार्य श्री ने कहा कि वृक्ष होता है जिसकी शाखायें होती हैं उसमें से पहले कली खिलती है फिर फूल खिलता है फिर उसमें फल आता है । यह एक स्वत: होने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है । इसी प्रकार यह प्रतिभास्थली है जिसमें ये छोटी – छोटी बच्चियां पढ़ाई के साथ – साथ संस्कार भी ग्रहण कर रही हैं।

आप लोगों की संख्या अभी कम है, आप संख्या की चिंता मत करो आप अपना काम ईमानदारी से मन लगाकर करो तो आपको सफलता अवश्य ही मिलेगी और आप के नये सखा मतलब आपके नये मित्र भी यहाँ आयेंगे और आपकी संख्या भी बढ़ जायेगी।

यहाँ इन बच्चों की पढ़ाई और संस्कार के लिए समाज का सहयोग मिलना आवश्यक है और इनकी शिक्षिकाएं भी अपने कर्त्तव्यों का पालन बहुत अच्छे से कर रही हैं । यहाँ पैसों का उतना महत्व नहीं है। आप लोग कहते हैं न कि पैसा तो हाँथ का मैल है इसे निर्मल करने का इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं है ।

समाज को इसके लिए हमेशा उत्सुक रहना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के अनुसार यहाँ अपने पैसों का सदुपयोग करना चाहिये। यहाँ बच्चों का निर्वाह नहीं निर्माण हो रहा है जो भविष्य में इसे और आगे पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ाते रहेंगे । आप लोगों का प्रयास सराहनीय है और आगे भी आप लोग ऐसा ही सहयोग इन बच्चों को देंगे जिससे यह कार्य आगे चलता रहेगा व बढ़ता रहेगा।

जीवन क्या है?

डॉ. अनिल कुमार जैन

अधिकतर लोगों को, सजीव और निर्जीव की पहचान करने में कोई कठिनाई नहीं होती है। उदाहरण के तौर पर वे आसानी से यह बता सकते हैं कि मक्खी, घोड़ा और पेड़ सजीव हैं जो वृद्धि और प्रजनन जैसी कुछ क्रियाओं को करते हैं। इस प्रकार जीव (सजीव) तथा निर्जीव (अजीव) की पहचान तो की जा सकती है, लेकिन (life) क्या है इसका सीधा उत्तर दे पाना कठिन है। जैव-वैज्ञानिकों के पास जीव से सम्बन्धित विशद् ज्ञान है, फिर भी वे जीवन को परिभाषित करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

जैन दर्शन में भी जीव सम्बन्धी विशद् विवेचन मिलता है तथा जीवन को परिभाषित करने का भी समीचीन प्रयास हुआ है। हम इस आलेख में विज्ञान तथा जैनदर्शन में वर्णित जीव के लक्षणों की तुलना करेंगे तथा जैनदर्शन में वर्णित जीवन के सम्बन्ध में भी चर्चा करेंगे।

जीव के लक्षण : वैज्ञानिक दृष्टि

पृथ्वी पर अनेकों प्रकार के जीव पाये जाते हैं। अब तक बीस लाख से अधिक प्रजातियों को खोजा जा चुमा है। वे सूक्ष्म बैक्टेरिया से लेकर विशालकाय व्हेल मछली तक के अनेक आकार में पायी जाती हैं। ये जीव विभिन्न प्रकार के वातावरण में पाये जा सकते हैं इनमें से कुछ गर्मी से तपते रेगिस्तान में भी मिल सकते हैं तथा कुछ अन्य बर्फीले ध्रुवों पर भी। जीवों के खानपान तथा रहन-सहन में भी विविधता पायी जाती है। इसके बावजूद भी सभी जीवों में कुछ समानताएँ होती हैं तथा वे ही जीव के लक्षण भी निर्धारित करती हैं। प्रत्येक जीव में एक प्रकार का रसायन पाया जाता है जो कि एक ही प्रकार की रसायनिक क्रिया भी करता है। ये रसायन एक यूनिट (Unit) में व्यवस्थित तरीके से रहते हैं जिसे कोशिका कहते हैं।

सभी जीवों में जो समान लक्षण पाये जाते हैं वे हैं- (1) प्रजनन (reproduction), (2) वृद्धि (growth), (3) चयापचय (metabolism), (4) हलन-चलन (movement), (5) संवेदन (responsiveness), तथा (6) अनुकूलन (adaptation)। कुछ जीव ऐसे भी हैं जिनमें ये सब पूर्णत: नहीं पाये जाते जबकि कुछ निर्जीवों में भी इनमें से कुछ गुण देखने को मिल जाते हैं। फिर भी ये गुण/लक्षण जीव की मूल प्रकृति को रेखांकित अवश्य करते हैं।

(1) प्रजनन- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे जीव अपनी ही जैसी प्रजाति पैदा करता है। यह दो प्रकार से होता है-योनिज (लैंगिक) तथा अयोनिज (अलैंगिक)। अयोनिज प्रजनन: पूर्व में स्थित जीव के विकसित होने से ही हो जाता है। योनिज प्रजनन दो सैक्स कोशिकाओं के द्वारा होता है। जब नर का शुक्राणु तथा मादा का अण्डाणु आपस में मिलते हैं तो एक नयी कोशिका का निर्माण होता है, इससे जीव जन्म लेता है। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि इस प्रक्रिया द्वारा प्रजनन करते हैं।

(2) वृद्धि- जीव के अपने आकार का क्रमिक विकास होना वृद्धि कहलाता है। वृक्ष कुछ सरल अणुओं, पानी तथा कार्बन-डाईआक्साइड से अपना भोजन बनाते हैं। तथा उनसे वृद्धि के लिए आवश्यक जटिल रसायन का निर्माण करते हैं। जबकि पशु-पक्षी अपने भोजन को ही टिश्यू की वृद्धि के लिए आवश्यक बना लेते हैं। वृद्धि निर्जीव में भी देखी जाती है, लेकिन सजीव और निर्जीव दोनों की वृद्धि में अन्तर है। निर्जीव

की वृद्धि उसके फलक पर एक नई पर्त जम जाने के कारण होती है जैसा कि क्रिस्टल आदि बनने में होता है।

(3) चयापचय- इस प्रक्रिया के दौरान जीव कुछ ऐसा रासायनिक प्रक्रिया करते हैं जिससे उन तत्त्वों का निर्माण होता है जो नयी कोशिकायें बनाने के लिए आवश्यक है। पुरानी कोशिकायें नष्ट हो जाती हैं तथा नयी कोशिकायें पैदा हो जाती हैं। इस प्रकार नयी कोशिकायें पुरानी कोशिकाओं को प्रतिस्थापित कर देती हैं।

(4) हलन-चलन- अधिकतर जीव हलन-चलन करते हैं। पौधों में भी आन्तरिक हलन-चलन होता है। वे प्रकाश की ओर झुक जाते हैं।

(5) संवेदन- जीव अपने चारों ओर स्थित वस्तुओं की मौजूदगी को महसूस करते हैं तथा उससे प्रभावित भी होते हैं। किसी अन्य की मौजूदगी से जीव के व्यवहार में परिवर्तन भी आ जाता है जिसे संवेदन या स्टिमुलस (stimulus) कहते हैं। अलग-अलग जीव को अलग-अलग वस्तु की मौजूदगी प्रभावित करती है। जैसे किसी अन्य की मौजूदगी में कछुआ अपने को कठोर कवच में छिपा लेता है। पौधे प्रकाश की उपस्थिति में उस ओर ही बढ़ने लगते हैं आदि।

(6) अनुकूल- जीवों में यह वह गुण है जिस कारण जीव अपने को मौजूद वातावरण में ढाल लेते हैं तथा स्वयं को उस वातावरण में जीने के योग्य बना लेते हैं। वस्तुतः अनुकूलन में जीव में स्थित जीन में ही परिवर्तन हो जाते हैं जो कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनमें चलते रहते हैं। आज जो प्रजातियाँ उपलब्ध हैं वे जीव के इस गुण के कारण ही हैं।

जैन दर्शन में जीव के लक्षण-

जैन दर्शन में संसारी जीव के लक्षणों को संज्ञा, पर्याप्ति एवं प्राण के आधार पर समझाया गया है। पहले हम यहाँ इनकी संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

संज्ञा- क्षुद्र प्राणी से लेकर मनुष्य व देव सभी संसारी जीवों में आहार, भय, मैथुन व परिग्रह इन चार के प्रति जो इच्छा पायी जाती है उसे संज्ञा कहते हैं। विशिष्ट अन्न आदि में संज्ञा अर्थात् इच्छा होना आहार संज्ञा है। अत्यन्त भय से उत्पन्न जो भाग कर छिप जाने की इच्छा होती है उसे भय-संज्ञा कहते हैं। कामसेवन रूप क्रिया की इच्छा को मैथुन-संज्ञा कहते हैं। धन-धान्यादि के अर्जन संग्रह व संरक्षण रूप जो इच्छा है उसे परिग्रह-संज्ञा कहते हैं।

पर्याप्ति- इन्द्रिय आदि रूप शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं। ये छह प्रकार की होती हैं- आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा तथा मन। योनि (उत्पत्ति स्थान) में प्रवेश करते ही जीव वहाँ अपने शरीर के योग्य पुद्गल वर्गणाओं का ग्रहण या आहार करता है। तत्पश्चात् उसके द्वारा क्रम से शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा व मन का निर्माण करता है। यद्यपि स्थूल दृष्टि से देखने पर इस कार्य में बहुत समय लगता होगा ऐसा प्रतीत होता है, लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उपरोक्त छहों कार्य की शक्ति की पूर्णता वह जीव एक अन्तर्मुहूर्त्त में पूरी कर लेता है। एक इन्द्रिय जीव की प्रथम चार (आहार, शरीर, इन्द्रिय तथा श्वासोच्छ्वास), दो इन्द्रियजीवों से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय जीवों तक के इन चार के साथ भाषा-पर्याप्ति इस तरह पांच पर्याप्तियां तथा सैनी पंचेन्द्रिय जीवों के छहों पर्याप्ति होती हैं। पर्याप्ति का प्रारम्भ एक साथ होता है, लेकिन इनकी पूर्णता क्रम में होती है।

प्राण– जीव जिससे जीता है वह प्राण कहलाते हैं। यह दो प्रकार का है– निश्चय और व्यवहार। जीव की चेतनत्व शक्ति उसका निश्चय प्राण है और पांच-इन्द्रिय, मन, वचन और काय ये तीन बल, आयु व श्वासोच्छ्वास ये दस व्यवहार-प्राण हैं। एकेन्द्रिय (स्थावर) जीवों के स्पर्शन इन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छवास और आयु ये चार प्राण होते हैं। द्वि इन्द्रिय जीवों के इन चार के साथ रसना इन्द्रिय एवं भाषा के साथ छह प्राण होते हैं। तीन इन्द्रिय जीवों के एक और घ्राण इन्द्रिय मिलाने पर सात, चार इन्द्रिय जीवों के चक्षु इन्द्रिय सहित आठ, असैनी पंचेन्द्रिय जीवों के एक और कर्ण इन्द्रिय मिलाने पर नौ तथा सैनी पंचेन्द्रिय जीवों के सभी दसों प्राण होते हैं।

पर्याप्ति तथा प्राण में कुछ अन्तर होता है। आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मनरूप शक्तियों की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं और जिनके द्वारा आत्मा जीवन संज्ञा को प्राप्त होता है इन्हें प्राण कहते हैं। इस प्रकार इन्द्रिय आदि शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं और जीवन के जो कारण हैं उन्हें प्राण कहते हैं। इसलिए पर्याप्ति कारण है और प्राण कार्य रूप है।

कुछ दिलचस्प बिन्दु

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विज्ञान में जीव के जिन लक्षणों का वर्णन किया गया है इनका वर्णन जैन दर्शन में भी किया गया है। मात्र नाम का अन्तर है। जीव विज्ञान के अनुसार प्रत्येक जीव में प्रजनन, वृद्धि, चयापचय, हलन-चलन, संवेदन तथा अनुकूल गुण पाये जाते हैं, जबकि जैनदर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव में चार संज्ञायें होती हैं तथा वह अपनी वृद्धि पर्याप्ति के अनुसार करता है। इन संज्ञाओं के समानान्तर वैज्ञानिक नाम निम्न प्रकार दिए जा सकते हैं–

जैनदर्शन	विज्ञान
आहार-संज्ञा	चयापचय
भय-संज्ञा	संवेदन, हलन-चलन
मैथुन-संज्ञा	प्रजनन
परिग्रह-संज्ञा	वृद्धि

इनके अतिरिक्त विज्ञान की भाषा में जिसे अनुकूलन कहा गया है उसे भी जैनदर्शन में स्वीकार किया गया है। जैनदर्शन के अनुसार काल चक्र निरन्तर चलता रहता है। काल में परिवर्तन के साथ-साथ जीव की लम्बाई (अवगाहना), पृष्ठास्थियों की संख्या तथा आयु में भी परिवर्तन हो जाता है। पंचम-काल के प्रारम्भ में मनुष्य की औसत अवगाहना सात हाथ तथा शरीर के पृष्ठ भाग में हड्डियों की संख्या 24 थी जो कि इस काल के अन्त में घटकर क्रमश: साढ़े-तीन हाथ तथा 12 रह जायेगी। इस प्रकार जीव के अनुकूलन गुण को जैनदर्शन में उस परिवर्तन के रूप में स्वीकार किया गया है जो कालक्रम के अनुसार होता रहता है। इस प्रकार विज्ञान में जीव के जिन लक्षणों का वर्णन किया गया है उनका वर्णन कुछ दूसरे नामों के साथ जैनदर्शन में भी किया गया है।

जीवन क्या है?

अभी तक जीव के लक्षणों की तो चर्चा की, लेकिन जीवन के बारे में विशेष चर्चा नहीं हुई है। वस्तुत: विज्ञान अभी तक जीवन को पारिभाषित नहीं कर पाया है, जबकि जैनदर्शन में इसकी विशुद्ध चर्चा मिलती है।

जैनदर्शन के अनुसार ''जिनके द्वारा आत्मा जीवन संज्ञा को प्राप्त होता है उन्हें प्राण कहते हैं।'' अत: जीवन तथा प्राण कथांचित एक ही हैं। जीव जिनसे जीता है वह प्राण कहलाते हैं; अत: जीव जिनसे जीता है वही जीवन(life) है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि चेतना ही प्राण है। यह चेतना अर्थात् जानने-देखने और अनुभव करने की सामर्थ्य प्रत्येक जीव में पाई जाती है यही जीवन (life) है। संसार- अवस्था में जो पांच इन्द्रियाँ (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण) तीन बल (मन, वचन, काय) आयु और श्वासोच्छ्वास यथायोग्य प्राप्त होते हैं उनका संयोग-वियोग होता रहता है। इन प्राणों के संयोग को जन्म और वियोग को मरण कहते हैं। जन्म-मरण के इस चक्र में चेतना सदा बनी रहती है यही जीवन है।

पता- फ्लैट नं. 401, प्रोमिनेंस एपार्टमेंट, मोतीपार्क के सामने, डी-197, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर 302015 राज. मो. 9925009499, 0141-2702299

ऊँची दुकान और फीका पकवान- आचार्य श्री विद्यासागर जी

आचार्यश्री ने प्रवचन में कहा कि जब तीर्थंकर भगवान का समवशरण लगता है तो उसमें काफी भीड़ होती है और जगह की कमी कभी नहीं पड़ती है । बहरे के कान ठीक हो जाते हैं उसे सब सुनाई देने लगता है, अंधे की आँखें ठीक हो जाती हैं और उसे सब दिखाई देने लग जाता है, लंगड़े के पैर ठीक हो जाते हैं और वह चलने लग जाता है वो भी बिना किसी ऑपरेशन, सर्जरी या बिना किसी नकली पैरों के सब कुछ अपने आप हो जाता है । मंदबुद्धि का दिमाग ठीक हो जाता है । एक बार एक गाँव में 25 वे तीर्थंकर कहकर समवशरण लगाया गया उसमें काफी भीड़ भी इकट्ठी हो गयी वहाँ बहरे, अंधे, लूले - लंगड़े, मंद बुद्धि लोग भी आये परन्तु उनका वहाँ जाकर भी कुछ नहीं हुआ । वे जब वापस आये तो अँधा अँधा ही था, बहरा बहरा ही था, लंगड़ा लंगड़ा ही था और मंदबुद्धि मंदबुद्धि ही था, किसी में कोई परिवर्तन नहीं आया तो लोग समझ गए की यह समवशरण वीतरागी का नहीं है । यह सब एक वीतरागी के समवशरण में ही संभव हो सकता है और वीतरागी समवशरण में आने वालों का पूर्ण श्रद्धान सम्यग्दर्शन का होना भी अनिवार्य है तभी कुछ परिवर्तन होना संभव है। सम्यग्दर्शन के भी आठ भेद बताये जाते हैं जिसका शास्त्रों में उल्लेख पढ़ने को मिलता है ।

आचार्य श्री ने कहा कि कपड़े दुकान वाले बुरा मत मानना । एक बार एक कपड़े की दुकान में एक ग्राहक आता है और कपड़े देखता है। देखते - देखते उसके सामने पूरा का पूरा कपड़ों का ढेर लग जाता है, दुकान का मालिक उससे पूछता है कि आपको किस वैरायटी का कपड़ा चाहिये ? तो ग्राहक कहता है कि आप अपनी दुकान का सारा माल दिखाइये मुझे जो पसंद आएगा उसे मैं लूँगा। कपड़े दुकान वाले का पसीना छूट जाता है और ग्राहक को चाय भी पिलाया (लोभ दिया) फिर भी ग्राहक संतुष्ट नहीं हुआ । आचार्य श्री ने कहा कि दुकान कैसी भी हो क्वालिटी अच्छी हो तो लोग ठेले में भी झूम जाते हैं । वो कहावत है न ''ऊँची दुकान और फीका पकवान''। दुकान बड़ी होने से कुछ नहीं होता माल अच्छा हो तो दुकान में भीड़ लगी रहती है । इसी प्रकार हमारे भाव भी सम्यग्दर्शन के प्रति बने रहना चाहिये और इसमें कभी कोई शंका उत्पन्न नहीं होना चाहिये तभी इसकी सार्थकता है ।

गतांक से आगे

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

–आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी

तत्पश्चात् उसी दिन 2.11.08 को पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम तीन पाण्डालों में एक जगह लाडु का कार्यक्रम, एक में वात्सल्य भोज, एवं एक पाण्डाल में पिच्छिका परिवर्तन भी किले के ऊपर ही सम्पन्न हुआ। जिसमें अपार जन समुदाय के बीच गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का पिच्छि परिवर्तन समारोह के साथ कण्ठपाठ प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम भी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। ग्वालियर किले के ऊपर करीब दस हजार लोगों की इतनी भीड़ को लोगों ने पहली बार देखा।

नया बाजार मन्दिर के सभागार में 23 नवम्बर को ग्वालियर के प्रसिद्ध महाकवि पण्डित रइधू साहित्य पर संगोष्ठी रखी गयी। जिसमे राजस्थान किशनगढ़ के प्रकांड विद्वान पंडित मूलचंदजी लुहाडिया व पं.श्री मदनलालजी बैनाडा आगरा आदि विद्वानों ने रइधू साहित्य पर प्रकाश डाला। गुरुवर आर्जवसागरजी ने भी रइधू कवि के साहित्य की विशेषता एवं गोपाचल पर्वत की विशेषता बतलाते हुए भक्तों को सारगर्भित प्रवचन दिये।

पश्चात् गुरुवर आर्जवसागरजी का विहार विनय नगर की ओर हो गया। वहाँ के भक्तों ने अष्टाह्निका पर्व पर सिद्धचक्र महामण्डल करने के लिये गुरुवर का सान्निध्य एवं आशीर्वाद के लिए श्रीफल भेंट किये और गुरुवर ने मंगल आशीर्वाद दिया। पश्चात् कार्तिक शुक्ला अष्टमी से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक बहुत ही हर्षोल्लास के साथ बड़ी प्रभावना से यह सिद्धचक्र महामण्डल विधान रोड पर पाण्डाल बनाकर गुरु प्रवचनों के साथ सम्पन्न हुआ। पश्चात् हरिशंकरपुरम् होते हुए आनन्द नगर पहुँचे। वहाँ पर गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। पश्चात् मेहगांव लोगों के बहुत बार किये गये नम्र निवेदन पर गुरुवर ने संघ सहित दीनदयाल नगर, मालनपुर होते हुए मेहगाँव की ओर विहार कर दिया।

मेहगाँव में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। पश्चात् दिनांक 9 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2008 तक श्री 1008 भगवान चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर के परम पूज्य सन्त शिरोमाणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम प्रभावक अध्यात्म योगी परम पूज्य गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ परम मंगल सान्निध्य में श्री नवीन वेदी प्रतिष्ठा व मण्डल विधान एवं कलशारोहण महोत्सव और विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। मन्दिर जी में श्री इन्द्रसेन सुभाषचन्द्र जैन द्वारा नवीन वेदी का निर्माण तथा श्री शान्तिलाल धर्मेन्द्र कुमार जैन द्वारा शिखर हेतु कलशों का निर्माण कराया गया है। प्रतिष्ठाचार्य पं. मनीष कुमार जैन शास्त्री टीकमगढ़ के निर्देशन में विधि–विधान पूर्वक यह महान अनुष्ठान भारी संख्या में गुरु प्रवचनों पूर्वक बड़ी धर्म प्रभावना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर संघ सहित गांव में स्थित श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ बड़ा मन्दिर पधारे। वहाँ भी प्रवचन एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई।

वहाँ से विहार करके गुरुवर संघ सहित बरासों क्षेत्र पर पधारे। नदी के किनारे स्थित इस क्षेत्र का बहुत ही मनोरम दृश्य लगता है। यहाँ पर भ. महावीर का समवशरण आया था। वहाँ के मन्दिरों का दर्शन करके लावण गाँव होते हुए गुरुवर का ससंघ भिण्ड नगर में मंगल पदार्पण हुआ। कुछ समय तक श्री दिगम्बर चन्द्रप्रभु जिनालय (परेड मन्दिर) में वास्तव्य रहा और प्रवचन और धार्मिक कक्षाओं के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई और

पाठशाला भी खुलवाई। जब पाठशाला लगती थी तब ऐसा लगता था मानो कोई विद्यालय हो करीब 300-350 बच्चे इस पाठशाला में पढ़ते थे और कन्यायें इन बच्चों को पढ़ाने का काम करती थीं। इससे बहुत अद्भुत प्रभावना हुई। पश्चात् चैत्यालय मन्दिर में भी कुछ समय तक ठहरना हुआ। यहाँ भी पाठशाला और प्रवचन आदि हुये। इस प्रकार करीब एक महीने का शीतकालीन प्रवास भिण्ड नगर में हुआ। पश्चात् फूप, बरै, जैतपुर, बाह आदि गाँव होते हुए गुरुवर का ससंघ बटेश्वर (शोरिपुर) में मंगल प्रवेश हुआ। यह भगवान नेमिनाथ का गर्भ, जन्म स्थान है और यह एक सिद्धक्षेत्र भी है। यहाँ से श्री यम, धन्य, विमलाश्रुत मुनिश्वरों ने मोक्ष पाया है और सुप्रतिष्ठित मुनिश्वर को यहीं पर केवलज्ञान भी हुआ। ऐसी धरा पर गुरुवर का करीब एक सप्ताह वास्तव्य रहा। पश्चात् शिकोहाबाद होते हुए फिरोजाबाद में मंगल प्रवेश हुआ। एक-दो दिन के प्रवास के दौरान वहाँ से टूण्डला विहार करते हुए आगरा पहुँचे वहाँ एम.डी. जैन कॉलेज मन्दिर में प्रवास रहा। पण्डित श्री बैनाडा परिवार ने भी वैयावृत्य, आहार दान आदि का लाभ लिया। पं. रतनलाल बैनाडा ने जब नवधाभक्ति पूर्वक गुरुवर आर्जवसागरजी आहारचर्या अपने गृह पर पूर्ण करवाई तब बतलाया कि मेरे गृह पर एक बालक भी रात्रि में भोजन नहीं करता और जमीकन्द तो कभी गृह में आते नहीं तथा प्रतिदिन मेरे गृह में रात्रि में सामूहिक शास्त्र स्वाध्याय चलता है। और आगरा में स्थित कई मन्दिरों का दर्शन किये साथही ताजमहल के सामने स्थित ताजगंज दि. जैन मन्दिर का भी दर्शन किया। तब वहाँ के लोगों द्वारा पं. बनारसीदास जी ने जो समयसार नाटक कृति उर्दू भाषा में लिखी थी वह हस्त लिखित कापी गुरुवर को दिखाई। पश्चात् कुछ दिन प्रवास के दौरान आगरा से विहार करके सिकंदरा आदि गाँव होते हुए गुरुवर मथुरा नगरी पहुँचे। वहाँ मेन रोड पर स्थित श्री अजितनाथ जिनालय में आहारचर्या आदि सम्पन्न हुई। यहाँ से अन्तिम केवली जम्बूस्वामी ने मोक्ष पद पाया। पश्चात् विहार करके भरतपुर गाँव में मंगलप्रवेश हुआ। यहाँ से राजस्थान प्रारम्भ हो गया। वहाँ से बयाना, हिण्डौन सिटी होते हुए अतिशय क्षेत्र महावीरजी में 6 मार्च 2009 को मंगल आगमन हुआ। क्षेत्र के मैनेजर आदि सब लोगों ने पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी। 12 मार्च को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत महावीरजी पधारे। वहाँ भगवान महावीर स्वामी के दर्शन कर उन्होंने गुरुवर आर्जवसागरजी का भी दर्शन एवं आशीर्वाद लिया। गुरुवर ने कुछ साहित्य भी उनको प्रदान किया। पश्चात् वहाँ से विहार करके पिलोदा होते हुए गंगापुर नगर पहुँचे प्रवचन आदि हुआ। और यहीं पर जयपुर के लोगों ने जयपुर में गुरुवर का आगमन हो इस भावना से श्रीफल भेंट किये।

पश्चात् पिपलाई होते हुए लालसोट नगर पहुँचे। वहाँ पर प्रवचन एवं आहारचर्या आदि सम्पन्न हुई। पश्चात् तुंगा होते हुए अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) में मंगल प्रवेश हुआ। दर्शन और आहार आदि किया। तदुपरान्त विहार करते हुए जयपुर नगर के सांगानेर संघीजी नसियाँ, बाजे के साथ भारी संख्या में श्रावक लोगों ने जय-जयकार के साथ गुरुवर आर्जवसागरजी के संघ की मंगल भव्य आगवानी की। विशाल मन्दिर की प्राचीन जिन प्रतिमाओं का दर्शनकर मन प्रफुल्लित हो गया। कुछ दिनों के प्रवास में गुरुवर पाण्डाल में मार्मिक प्रवचनों एवं संस्कार को देने वाली पाठशाला की शुरुआत हुई। वीरोदय नगर में स्थित आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास के भव्यों की मंगल भावना से वहाँ गुरुवर का मंगल पदार्पण हुआ एवं प्रवचनादि से विद्वानों ने धर्म लाभ प्राप्त किया। तथाहि राजस्थान महासभा एवं महावीर जयन्ती उत्सव कमेटी द्वारा नगर के बीच सामूहिक रूप से मनाये जाने वाले विशाल आयोजन में गुरुवर आर्जवसागरजी को संघ सहित पधारने का नम्र निवेदन किया गया।

महावीर जयन्ती सम्पन्नः-

पश्चात् मधुबन आदि मन्दिरों का दर्शन करते हुए गुरुवर का आगमन जौहरी बाजार में हुआ पुनः महावीर जयन्ती एवं गुरुवर के 23वाँ मुनि दीक्षा दिवस पर्व पर गुरुवर का मंगल सान्निध्य प्राप्त करने समाज द्वारा श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया गया। पश्चात् महावीर जयन्ती के दिन गोधान मन्दिर पर भगवान महावीर जयन्ती एवं गुरुवर आर्जवसागरजी का 23वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस मध्याह्न में हर्षोल्लास के साथ मनाना सुनिश्चित हुआ। उसके पूर्व प्रातः महावीर जयन्ती के जुलूस उत्सव के उपरान्त इसी शुभ अवसर पर रामलीला मैदान में विशाल जन समुदाय के बीच गुरुवर आर्जवसागरजी के मंगल प्रवचन हुये। जौहरी बाजार में कुछ काल के प्रवास में प्रवचन पाठशाला प्रारम्भ आदि की प्रभावना के उपरान्त गुरुवर ने शहर के मन्दिरों का दर्शन करते हुए चूलगिरि की तलहटी में स्थित नसियाँ का दर्शन किया। वहाँ पर स्थित आ. सुपार्श्वमति माताजी ने ससंघ गुरुवर की आगवानी की और ससंघ में मार्मिक आगमिक चर्चायें भी हुयीं एवं माताजी ने मुनिवर की स्वास्थ कुशलता पूछते हुए कुछ शास्त्र भी प्रदान किये। पश्चात् मुनिवर ने चूलगिरि पर ऊपर स्थित मन्दिरों के दर्शन करके नसियाँजी में आहार चर्या करके पापलियान मन्दिर की कमेटी के निवेदन से पार्श्वनाथ भवन में पदार्पण किया। वहीं पर ग्रीष्मकालीन प्रवास रहा। प्रातः कालीन प्रवचन शृंखला में भव्यों ने अधिक लाभ लिया। पापलियान मन्दिर में बनी नयी वेदियों में प्रतिमाएँ स्थापन हेतु वहाँ की कमेटी ने गुरुवर आर्जवसागरजी से पंचकल्याणक के लिए सान्निध्य एवं आशीर्वाद हेतु श्रीफल भेंट किये। यह श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव दिनांक 14 मई से 21 मई 2009 तक गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रवर गुलाबचन्दजी 'पुष्प' टीकमगढ़ (म.प्र.) के निर्देशन में ब्र.पं. जयकुमारजी 'निशान्त' द्वारा सभी धार्मिक विधि विधान सभी क्रियायें आगम परम्पराओं पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुईं।

जिसमें दिनांक 14 मई 2009 को देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, प्रतिष्ठाचार्य निमंत्रण के पश्चात् घट यात्रा का एक विशाल जुलूस मंदिरजी से समारोह स्थल राजस्थान चेम्बर भवन के मैदान में हाथी, घोड़े, बग्गी और बेण्ड वाले सहित महिलाओं द्वारा अपने मस्तक पर मंगल कलश लिए हुए जैन धर्म की जयकारों के साथ पहुँची। पश्चात् ध्वजारोहण एवं मण्डप उद्घाटन, वेदी शुद्धि, नित्यपूजा, मण्डप प्रतिष्ठा का कार्य हुआ और दीप प्रज्ज्वलन के साथ मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के मंगल प्रवचन हुये। सायंकाल में महाआरती, शास्त्र प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस पंच कल्याणक में माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी सिंघई श्री भरतकुमार जैन, श्रीमती क्रान्ति जैन दमोह (म.प्र.) के निवासी को प्राप्त हुआ। और इस पंचकल्याणक की पत्रिका का विमोचन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने किया।

दिनांक 15 मई को गर्भकल्याणक पूर्व की क्रियाएँ पूरी की गईं एवं मुनिश्री का मंगल प्रवचन गर्भ कल्याणक के संदर्भ में हुआ। इसके पश्चात् याग-मण्डल विधान हुआ। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के पश्चात् इन्द्र दरबार लगा, सोलह स्वप्न, नृत्यगान एवं गर्भकल्याणक पूर्व की क्रियायें सजीव रूप से प्रस्तुत की गईं। 16 मई को गर्भ कल्याणक की क्रियायें सम्पन्न हुईं। मुनिवर आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने भ्रूणहत्या न करने की शपथ दिलाई एवं गर्भ में बच्चे के आने पर हमें अच्छे विचार मन में

संजोने चाहिए एवं वर्तमान समय में टी.वी. दूरदर्शन के भयानक अश्लील दृश्यों से विशेषकर गर्भवती माता को दूर रहना चाहिए। जिससे तीर्थंकर रूप जैसे बालक का जन्म हो सके। सायंकाल में महाआरती, शास्त्र प्रवचन के पश्चात् महाराज नाभिराय का दरबार, मरुदेवी की सेवा व छप्पन कुमारियों द्वारा भेंट आदि की सुन्दर सजीव प्रस्तुति दी गई। माता के सोलह स्वप्नों को चित्रों के रूप में सजीव नाटक देखकर सभी भाव-विभोर हो गये।

दिनांक 17 मई को जन्मकल्याणक में आदिकुमार का जन्म महोत्सव, इन्द्राणी द्वारा आदिकुमार को लाना व ऐरावत हाथी द्वारा पाण्डुकशिला की ओर विशाल जुलूस रवाना हुआ जिसमें 1008 अभिषेक कलशों व बैण्ड बाजों के साथ भारी जन समुदाय उपस्थित था। भव्य जुलूस शहर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ वापिस समारोह स्थल पर आया जहाँ स्थित पाण्डुशिला पर भगवान का अभिषेक किया गया। तत्पश्चात् आदिकुमार को माता-पिता को सौंपा गया। मुनिवर का जन्मकल्याणक पर मंगल प्रवचन हुआ। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के उपरान्त आदिकुमार के पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ। सभी ने पालना झुलाने में सहभागिता निभाई। तत्पश्चात् आदिकुमार के साथ हुई बाल क्रीड़ा की मनोहारी प्रस्तुति प्रदान की गईं। 18 मई को तपकल्याणक से सम्बन्धित सभी क्रियायें सम्पन्न हुईं। सुबह में नित्यपूजा, विधान पूजन एवं मुनिवर का विशेष प्रवचन सम्पन्न हुआ। दोपहर को महाराज नाभिराय का दरबार व राज्याभिषेक हुआ एवं असि, मसि, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या की महत्ता बतलाई गई व उसका कलाकारों द्वारा सजीव प्रदर्शन किया गया। नीलांजना का नृत्य व उसकी आकस्मिक मृत्यु से उत्पन्न वैराग्य की भावना आना एवं अपने सुपुत्रों भरत, बाहुबली को राज्य को सौंपने के दृश्य प्रस्तुत किये गये। भरत की भूमिका में श्री सुनील जैन एवं बाहुबली की भूमिका निभाने में श्री राजेश जैन (सिरमोर) को सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् लौकान्तिक देवों द्वारा वैराग्य स्तुति, पालकी पहले कौन उठाये ? ऐसा वार्तालाप व वन प्रस्थान दीक्षा आदि की भाव पूर्ण प्रस्तुति प्रदान की गई। सायंकाल में महाआरती एवं शास्त्र प्रवचन के उपरान्त मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज द्वारा स्थापित पाठशालाओं के बच्चों ने भी नाटक प्रस्तुत किये एवं महिला मण्डल ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

दिनांक 19 मई मंगलवार को शुभ अवसर पर पूजन एवं मुनिवर के प्रवचन के पश्चात् मुनिराज आदिकुमार के प्रथम आहार का कार्यक्रम हुआ। दोपहर दो बजे मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज द्वारा मंत्राराधना, प्राण प्रतिष्ठा, सूरिमंत्र, केवल-ज्ञानोत्पत्ति एवं समवशरण की रचना हुई। जिसमें गणधर के रूप में मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज का मंगलमय उद्‌बोधन हुआ। जिसमें उन्होंने जिससे कर्म क्षय किया जाता है ऐसे ध्यान के प्रसंग पर सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की। रात्रि में दिगम्बर जैन सांस्कृतिक मण्डल, मण्डलेश्वर (म.प्र.) द्वारा 'सत्यपथ की ओर अग्रसर सती अंजना' नाटक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। दिनांक 20 को मोक्षकल्याणक के अंतर्गत भगवान आदिनाथ का कैलाश पर्वत पर दर्शन, निर्वाण प्राप्ति, निर्वाण कल्याणक पूजन व हवन के कार्यक्रम समारोह स्थल पर सम्पन्न हुये। तत्पश्चात् विशाल जुलूस के रूप में श्रीजी की मूर्तियों को अपने मस्तक पर विराजमान किये श्रावक जन बैण्ड-बाजों के साथ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पापलियान पहुँचे व भारी उल्लास एवं विधि विधान के साथ जिन बिम्बों को नवीन वेदियों में हर्षध्वनि के साथ विराजमान किया। सभी कार्यक्रमों की सानंद समाप्ति पर समारोह के प्रमुख समन्वयक, राजस्थान जैन समाज के मंत्री एवं

जयपुर संभाग महासभा के अध्यक्ष श्री कमल जैन ने महाराज व संघ के प्रति कृतज्ञता समाज की ओर से ज्ञापित की और सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया। पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह में सांसद श्री महेश जोशी, विधायक श्री मोहनलाल गुप्ता, महापौर पंकज जोशी एवं अन्य समाज के गणमान्य महानुभावों एवं संस्थागत प्रतिनिधियों ने अपूर्व उल्लास के साथ सहभागिता निभाई एवं मुनिवर का आशीष प्राप्त किया। इस समारोह में सारे भारत वर्ष के सुदूर प्रदेशों, कर्नाटक, तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, इन्दौर, भोपाल, दमोह एवं मध्यप्रदेश के अन्य भागों से महाराजश्री के भक्तों ने समारोह में पधारकर महोत्सव की शोभा बढ़ाई। इस पंचकल्याणक में रत्न, स्वर्ण, रजत एवं पाषाण के करीब 60 से ज्यादा जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा हुई थी। सुनील राजेश की ओर से चार प्रतिष्ठित रत्नबिम्ब बड़े मन्दिर पथरिया दमोह में विराजमान हेतु वहाँ की कमेटी राजेश चौधरी आदि को प्रदान किये गये।

दिनांक 21 मई को गाजे-बाजे व हाथी-घोड़ों व पालकियों के साथ एक विशेष जुलूस शहर के बाजारों से गुजरता हुआ श्रीजी के पालकी के साथ-साथ एवं मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री दि.जैन मन्दिर, पापलियान पहुँचा। पश्चात् प्रतिष्ठाचार्य एवं सहयोगी पण्डित वर्गों के प्रति सभी सौधर्म एवं इन्द्र इन्द्राणियों के प्रति और सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। अन्त में मुनिवर ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए सभी के सुखमय मंगलमय जीवन की कामना की। इस प्रकार जयपुर महानगरी में यह पंचकल्याणक ऐतिहासिक कार्यक्रम के रूप में सानन्द मंगलमय सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात् दीवान अमरचन्द की नसिया मन्दिरों का दर्शन करते हुए गुरुवर का ससंघ दर्शनार्थ आमेर किले की ओर विहार हुआ। वहाँ पहुँचकर आमेर में स्थित करीब 7 दि. जैन मन्दिरों का दर्शन किया। 2-3 दिन का प्रवास भी रहा। वहाँ पर एक दिन निहार हेतु आमेर से ढाई किलामीटर की दूरी पर जब पूज्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ जंगल पधारे तब सरकारी बन्धन में बंधे 50 शेरों के लिए गुरु दर्शन मिला। पश्चात् गुरुवर सोनियान मन्दिर, जवाहर नगर, मुलतान मन्दिर (जहाँ के मन्दिर में पाकिस्तान से लायी गयी जिन प्रतिमायें विराजित हैं) दर्शन करते हुए गायत्री नगर के भव्यों के निवेदन पर वहाँ मंगल प्रवेश हुआ। परम पूज्य गुरुवर 108 आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 30/05/2009 से 31/05/2009 तक वेदी शुद्धि, जिनबिम्ब विराजमान, यागमण्डल विधान तथा आदिनाथ भवन का लोकार्पण एवं जिनेन्द्र रथ यात्रा के कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुए।

पश्चात् महावीर नगर होते हुए मीरामार्ग (मानसरोवर) पहुँचे। वहाँ के विशाल मन्दिर का दर्शन किया। गुरुवर के सान्निध्य में वहाँ पर श्री आदिनाथ भवन का भव्य शिलान्यास का कार्यक्रम हुआ। कुछ दिनों के प्रवास में प्रवचनों के माध्यम से अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् हीरापथ के मन्दिर में संस्कार के प्रवचनों के माध्यम धार्मिक पाठशाला की स्थापना करवाई। तदुपरान्त वरुण पथ, कीर्ति नगर के मन्दिरों का दर्शन करते हुए अतिशय क्षेत्र मोजमाबाद में पदार्पण हुआ और वहाँ मौजूद विशाल-विशाल प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन हुआ।

पश्चात् दूदू गाँव में जिनदर्शन व आहारचर्या के उपरान्त किशनगढ़ समाज के मंगल निवेदन पर गुरुवर का विहार किशनगढ़ की ओर हुआ। प. श्री मूलचन्दजी लुहाड़िया, श्री अशोकजी पाटनी (आर.के. मार्बल

वाले) चौका लेकर रास्ते में ही आ गये। भरी समाज एवं बेण्ड-बाजों के साथ किशनगढ़ नगर में 24 जून को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 42 वाँ दीक्षा जयन्ती दिवस बहुत ही भक्तिभाव के साथ हर्षोल्लास पूर्वक एवं अपार जनसमूह के बीच बड़ी धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में जयपुर से करीब 8-10 बस भरकर भक्तगण किशनगढ़ आये थे। इसी तरह नसीराबाद, व्यावर, अजमेर आदि नगरों से भी भारी संख्या में भक्तगण आये थे। श्रीमती सुशीला पाटनी ने इस कार्यक्रम का मंगलाचरण किया और प्रवचन के पूर्व प.मूलचंद जी लुहाड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री अशोकजी पाटनी (आर.के. मार्बल्स) परिवार ने मुनि श्री के कर कमलों में शास्त्र भेंट किया। पश्चात् मुनिश्री ने अपने प्रवचनों में आचार्यश्री की दीक्षा की महिमा बतलायी और ब्र. हरेशजी के लिए बहुत दिनों से किये गये निवेदन के उपरान्त प.पू. गुरुवर श्री आर्जवसागरजी महाराज ने अपने कर कमलों से उनको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के उपरान्त उनका क्षु.हर्षितसागरजी नाम रखा गया। किशनगढ़ वालों ने भी वर्षायोग हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया गया। लेकिन पहले से ही प.पू. मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को अजमेर की ओर विहार एवं चातुर्मास करने हेतु श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति द्वारा चार-पाँच बार जयपुर, किशनगढ़ जाकर निवेदन कर श्रीफल चढ़ाये गये थे। इसके ही फलस्वरूप ही अजमेर वासियों के पुण्य उदय से दिनांक 7 जुलाई को मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ मंगलप्रवेश अजमेर नगर में हुआ। इस मंगल प्रवेश का जुलूस जयपुर रोड, गांधी भवन, चूड़ी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट होते हुए विश्व प्रसिद्ध सिद्धकूट चैत्यालय सोनीजी की नसियाँ पहुँचा। शहर के प्रमुख मार्ग गुरुवर के जयघोष से गुंजायमान हो रहे थे। श्रावकगण मंगल गीत गाते हुए गुरुवर के साथ चल रहे थे। पूरा नगर मुनिवर के मंगल प्रवेश से प्रफुल्लित हो गया। ज्ञातव्य रहे कि अजमेर सोनीजी की नसियाँ में मूलनायक आदिनाथ भगवान हैं। यहाँ पर जिन भव्यों का आजीवन रात्रि भोजन का त्याग है वे ही भगवान का अभिषेक कर सकते हैं और यहाँ लाल नसियाँ में भगवान के महान कल्याणकों की अनुपम स्वर्णिम रचना पं.सदा-सुखदास जी के निर्देशन में की गयी थी।

12 जुलाई 2009 का यह मंगल दिवस अजमेर के इतिहास में कभी न भुलाए जाने वाले संस्मरण के रूप में जुड़ गया। मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के पावन वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना प्रात: 8:30 बजे सोनीजी की नसियाँ में हुई। कलश की स्थापना के आकर्षण का केन्द्र पाँच कलश थे जिनको रत्नत्रय कलश, प्रवचन कलश, धर्मप्रभावना कलश, अतिथि सत्कार कलश एवं पुरस्कार कलश के नाम से सुशोभित किया गया। मुख्य पाँच परिवारों ने कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण पूर्वक प्रारम्भ हुई। ध्वजारोहण, दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् गुरुवर के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सूरत से पधारे श्रीमान् नरेश भाई (दिल्ली वालों) को मिला एवं पं. मूलचन्द लुहाड़िया भी पुण्यार्जक बने। पश्चात् भक्तों के द्वारा शास्त्र भेंट किया गया। चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज, महाकवि आ. ज्ञानसागरजी महाराज एवं सन्त शिरोमणि आ. विद्यासागरजी के चित्रों का अनावरण किया गया। गुरुवर के द्वारा प्रात: 8:00 बजे प्रतिदिन ध्यान पर आधारित प्रवचन शृंखला प्रारम्भ हुई जिसमें अजमेर नगरवासियों ने उत्साह से भाग लेकर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

मुनिवर के आशीर्वाद व प्रेरणा से मोक्षसप्तमी पर्व पर सोनीजी की नसियाँ में श्री दिगम्बर ऋषभदेव जैनागम पाठशाला प्रारम्भ की गई। जिसकी 150 छात्र-छात्राएँ एवं 10 प्रशिक्षित अध्यापिकाओं द्वारा विधिवत् शुरुआत की गई। जिसमें तीन कक्षाओं में छात्र-छात्राओं को विभक्त किया गया। प्रथम आचार्य शान्तिसागरजी ग्रुप, द्वितीय आ.ज्ञानसागरजी ग्रुप, तृतीय आ.विद्यासागरजी ग्रुप का नाम दिया गया।

पूज्य मुनिवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के परम सान्निध्य में पर्वराज षोडशकारण व्रत विधान महोत्सव दिनांक 5 अगस्त 2009 को आयोजित किया गया। मंगल कलश की स्थापना भी की गई। श्री अशोक जैन शाह बजाज के द्वारा सामूहिक 32 दिवसीय पूजन हेतु पूजन द्रव्य का दान दिया गया। करीब 100 लोगों ने अजमेर नगर में प्रथम बार सामूहिक रूप से शील संयम से कुएँ का जल एवं मर्यादित आहार लिया। एक आहार व एक उपवास अथवा एकाशन पूर्वक बत्तीस दिवसीय षोडशकरण व्रत अनुष्ठान महोत्सव संगीतमय पूजन एवं भक्ति के साथ मनाया। मुनिवर ने स्व रचित तीर्थोदय काव्य के माध्यम से एवं सोलह भावनाओं पर आधारित प्रवचन शृंखला से सभी श्रावक गणों का मन धर्म-मार्ग की ओर विशेष आकृष्ट कर दिया।

रक्षाबन्धन के दिन शुरु हुए इस पावन विधान महोत्सव में प्रात: अभिषेक व शान्तिधारा की गई। मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज ने विष्णुकुमार मुनिराज की कथा के माध्यम से उपदेश दिया कि जिस तरह विष्णुकुमार मुनिराज ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए 700 मुनियों को उपसर्ग से बचाया। हमें भी देव-शास्त्र-गुरु के सम्मान व रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। विष्णुकुमार मुनिराज की विशेष पूजन करके 700 नारियल गोलों के साथ अर्घ समर्पित किये गये। जिसमें अजमेर समाज के सभी श्रावकों ने भाग लिया। सभी श्रावकों ने एक-दूसरे की कलाई पर धर्म रक्षा का संकल्प सूत्र बांधा।

दिनांक 13.08.09 को गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के दर्शनार्थ केन्द्रीय मंत्री श्री सचिन पायलट अजमेर सोनीजी की नसियाँ मन्दिर पधारे थे। मुनिवर ने उनको आशीर्वाद देते हुए ग्वालियर में स्थित वर्धमान मन्दिर प्राप्त करने हेतु उन्हें समाचार सुनाया और अपना कुछ साहित्य भी उनको आशीर्वाद पूर्वक प्रदान किया।

दशलक्षण पर्यूषण पर्व के सुअवसर पर संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की दीक्षा एवं तपस्थली ऐतिहासिक धर्म नगरी अजमेर की सोनीजी की नसियाँ में मुनिवर श्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में श्रावक साधना संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान के अजमेर, नसीराबाद, केकड़ी, किशनगढ़, सांवर, सरवाड आदि स्थानों से पधारे सैकड़ों श्रावकों ने ज्ञानार्जन व धर्म लाभ प्राप्त किया। इस शिविर में भी मंगल कलश स्थापना हुई। पर्यूषण पर्व में प्रात:काल 8:30 बजे गुरुवर के मुखारबिन्द से दस धर्मों पर विशेष प्रवचन का लाभ श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों को तीन संध्याकालों में ध्यान अभ्यास, प्रात: सुप्रभात स्तोत्र, द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ) का अर्थ, प्रात: 6:30 बजे से संगीतमय सामूहिक पूजन तथा मध्याह्न में जैनागम संस्कार का स्वाध्याय, तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्याय की वाचन एवं मुनिवर द्वारा प्रतिदिन एक-एक अध्याय पर प्रवचन हुए। शाम को प्रतिक्रमण, गुरु भक्ति एवं रात को विद्वानों के प्रवचन तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। शिविरार्थियों को कुँए के जल से मर्यादित शुद्ध आहार कराया गया एवं सायंकाल में केवल पेयाहार आदि की समुचित व्यवस्था की गई।

दिनांक 4 सितम्बर 09 को पर्यूषण पर्व के समापन पर 13 महिलाओं एव पुरुषों ने 13 एवं 11 उपवास कर धर्म साधना की। मुनिवर के सान्निध्य में षोडशकारण व्रत अनुष्ठान, श्रावक संस्कार साधना शिविर में बैठे शिविरार्थियों के साथ उपवास वालों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान कार्यक्रम के पूर्व सोनीजी की नसियाँ स्थित रत्नों से निर्मित जिनेन्द्र प्रतिमाओं के अभिषेक हुए। सभी शिविरार्थियों एवं उपवास करने वाले पुण्यार्जकों को धर्म प्रभावना हेतु भव्य शोभा यात्रा की शोभा में ढोल, ऊँट, घोड़े, बग्गियाँ, बैण्ड-बाजे आदि शामिल थे। संगीतमय भजन पार्टी अपने संगीत की स्वर लहरियों से धर्म प्रभावना करते हुए इस अलौकिक श्रावक साधना संस्कार शिविर की महिमा वर्णित कर रहे थे। सैकड़ों शिविरार्थियों एवं श्रावकगण हाथों में केसरिया पताका लिए जैन धर्म की जय-जयकार कर रहे थे। नगर के सभी मार्गों को स्वागत द्वार से सजाया गया था। पाँच सितम्बर को षोडसकारण व्रत अनुष्ठान महोत्सव के समापन पर सोलहकारण महामण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ। विधान की समाप्ति के पश्चात् दोपहर में क्षमावाणी के अवसर पर जिनाभिषेक के पूर्व मुनिवर श्री के क्षमावाणी पर मंगल उद्‌बोधन भी हुए। इसके पश्चात् सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन सम्पन्न हुआ। केसरगंज के कलशाभिषेक में भी मुनिवर का ससंघ सान्निध्य सम्पन्न हुआ था। अजमेर वर्षायोग के दौरान मुनिवर द्वारा समस्त श्रावकों को तीर्थोदय काव्य, इष्टोपदेश, द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थ सूत्र, सम्यक् ध्यान शतक तथा वारासाणुवेक्खा का स्वाध्याय सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

सन्त शिरोमणि आ.श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिवर श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने गुरुवर की दीक्षा स्थली को अपने अजमेर चातुर्मास प्रवास में निकट जाकर देखा और देखते ही अपने भावों की अभिव्यक्ति की एवं दिनांक 18.09.09 की धर्मसभा में अपने भावों को प्रकट करते हुए बड़े ही ह्रदय स्पर्शी उद्‌बोधन के माध्यम से उद्‌बोधित करते हुए समस्त दिगम्बर जैन समाज अजमेर को मार्गदर्शन देते हुए बताया कि अनमोल समय व्यर्थ में निकला जा रहा है, मोक्षमार्ग के प्रभावक गुरुवर सन्त शिरोमणि आ.श्री विद्यासागरजी के इस दीक्षा स्थान के माध्यम से जो अजमेर को ख्याति मिली है, उसका महत्त्व साधारण व्यक्ति की समझ से बाहर की बात है। दीक्षा स्थान के महत्त्व के बारे में मुनिवर ने बताते हुए कहा कि जब मैं प्रथम बार गुरुदेव के दीक्षा स्थल पर उन पवित्र वर्गणाओं को देखने के भाव करके गया तो ये पाया कि वह स्थान देखने लायक व आशानुरूप नहीं था। इससे मुनिवर का मन द्रवित हो उठा फलस्वरूप पूज्य मुनिवर आर्जवसागरजी तत्काल ही सोनी जी की नसियाँ, अजमेर चातुर्मास स्थल पर आयोजित धर्मसभा में भाव विभोर होकर गुरुदेव का स्मरण करते हुए उस पावन स्थान का समाज को महत्त्व बताया जिससे उपस्थित सभी जिनधर्मी एक साथ एक आवाज में महाराज के उद्‌बोधन से प्रतिज्ञारत हुए और सभी ने यह संकल्प लिया कि हम अजमेर के सभी जिनधर्मी आपके मार्ग-दर्शनानुसार अतिशीघ्र आ.श्री विद्यासागरजी महाराज के मोक्षमार्ग की जननी जन्मभूमि को एक ऐतिहासिक रूप प्रदान करने का प्रण लेते हैं कि वर्तमान एवं आने वाली भावी पीढ़ी के लिए मोक्षमार्ग की प्रेरणा देने वाली इस पवित्र धर्म धरा को पूज्यनीय बनाने में कोई कसर नहीं रखेंगे। और इसका शुभ नाम **दीक्षायतन** रखना चाहिए जिससे भव्यों को दीक्षा लेने की प्रेरणा मिल सके। इसके फलस्वरूप आ.श्री. विद्यासागरजी महाराज की जन्म जयन्ती कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा दिनांक 4.10.09 को अजमेर में

आचार्यश्री महाराज के ससंघ सान्निध्य में दीक्षायतन का शिलान्यास समारोह रखा गया। इस कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री अशोक पाटनी आर.के.मार्बल्स वालों ने किया और वहाँ पर विद्याधर से विद्यासागर की प्रदर्शनी लगायी गयी। तथा दिगम्बर जैन महासमिति महिला संभाग के द्वारा संयमी महिलाओं का विशेष सम्मान समारोह का कार्यक्रम किया गया। जिसमें अणुव्रत-प्रतिमा धारण, बारा सौ चौंतीस (1234) व्रत उपवास, समवशरण व्रत उपवास एवं मन्दिर निर्माण करने वाले परिवार सम्मानित हुए। पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन भी सम्पन्न हुआ। दीक्षायतन पर आचार्यश्री ज्ञानसागरजी मुनिवर विद्यासागर को दीक्षा देते हुए दृश्य का लाइटिंग युक्त बोर्ड लगवा दिया गया। अब 'दीक्षायतन' सही रूप में प्रकाशित होने लगा।

तारीख 2 व 3 अक्टूबर को प्रात: 8:15 बजे से स्थानीय कवियों द्वारा स्वरचित धार्मिक कवि संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। जिसमें बहुत लोगों ने कविता रस पान का लाभ लिया और विशिष्ट कविताकारों को पुरस्कृत भी किया गया। दीपावली के एक सप्ताह पूर्व गुरुवर ससंघ पार्श्वनाथ कॉलोनि पहुँचे। वहाँ धार्मिक कंठपाठ प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। दीपावली पर्व के दिन प्रात: 7:00 बजे निर्वाणलाडु एवं कलश निष्ठापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अजमेर में स्थित वैशाली नगर में समर्पण ध्यान शिविर वालों को मुनिवर के दर्शनार्थ आमंत्रित किया गया। वहाँ पर उपस्थित ध्यान पिपासुओं को ध्यान का आधार प्रसन्नचित्त व शाकाहार पर मुनिवर के प्रवचन हुये। गुरुवर के ध्यान पर प्रवचन सुनकर सब लोग हर्ष विभोर होकर प्रसन्नचित्त हो गये। दिनांक 24 अक्टूबर को अनेक डाक्टर लोगों के बीच चिकित्सा विज्ञान के आधार पर अहिंसा एवं शाकाहार संगोष्ठी हुई।

पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम 25 अक्टूबर को दोपहर 2:00 बजे छतरी योजना पर बहुत हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसी कार्यक्रम में कंठपाठ प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। पिच्छि परिवर्तन के दिन पाठशाला जयपुर के द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंच संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल ने किया ओर बाहर से पधारे अतिथियों में गौशाला के अध्यक्ष दानवीर श्री पद्मराज जैन दावणगेरे (कर्नाटक), डॉ.के.एम.गंगवाल पूना, डॉ.सी.देवकुमार दिल्ली, डॉ. अभय दगड़ा कोपरगांव (महाराष्ट्र), डॉ. अल्पना मोदी, ग्वालियर, डॉ. संजय जैन पथरिया, डॉ. अजित जैन व श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल, श्रीकरण सिंह यादव (जैन) हवलदार दिल्ली पुलिस, विद्वत प्रवर पंडित श्री मूलचंदजी लुहाड़िया किशनगढ़, श्रीमती सुशीला पाटनी, किशनगढ़, श्री सुनील जौहरी, जयपुर, आदि लोगों को कमेटी के द्वारा सम्मानित किया गया। चातुर्मास कलश भी स्थापित करने वाले लोगों के लिए प्रदान किये गये। पश्चात् पिच्छि परिवर्तन कार्यक्रम में मुनिवर के लिए नई पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य श्री सुनील जौहरी सहपरिवार जयपुर वालों को मिला। मुनिवर के कर कमलों में शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य श्री राजेश जैन 'रज्जन' दमोह ने प्राप्त किया। मुनिवर से पुरानी पिच्छिका को प्राप्त करने का सौभाग्य श्री नरेश जैन श्रीमती रीता जैन अजमेर वालों को प्राप्त हुआ। अन्त में मुनिवर के मंगल प्रवचन हुए। इस प्रकार यह पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

क्रमश:...........

॥ श्री महावीराय नमः ॥

सदाचारयुत शिक्षा में जीवन की उन्नति

(जैन स्कूल प्रवचन, शाहपुर)

-प्रवचनकार-आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

आज भगवान महावीर के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। भगवान महावीर का जन्म व उनका अहिंसामय उपदेश विश्व के कल्याण के लिए हुआ। भारत के संविधान की हस्तलिखित प्रति के मुख्य पृष्ठ पर भगवान महावीर का चित्र अंकित है। भगवान महावीर के उपदेशों का वर्णन ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थवेद तथा अन्य जैनेत्तर ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। महात्मा गाँधीजी भी अहिंसा के पथ पर चले हैं।

आज हम भी बहुत गौरव का अनुभव करते हैं कि आज भी अहिंसा का उद्घोष हो रहा है। एक बालक भी पूरे देश का पालक बन सकता है। यदि शिक्षा शिष्टाचार के माध्यम से दी जाये तो बहुत विकास हो सकता है।

''जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरू नहीं।''

यदि तुमने अपना गुरु बनाया है तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। ''विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्॥'' विनय के बिना विद्या नहीं और विद्या के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना सुख नहीं इसलिए हमें गुरुओं की विनय करनी चाहिए। 'जी हाँ' करके बोलना चाहिए और उनकी पूर्ण विनय करनी चाहिए। गुरु यदि हमें डाँटें तो हमें बुरा नहीं मानना चाहिए। क्योंकि 'गुरुजी मारें धम्म-धम्म, विद्या आवे छम्म-छम्म'

''गुरु कुलाल शिशु कुंभ है, गड़ गड़ काड़े, खोट।
अंदर हाथ पसार के, बाहर मारत चोट॥''

गुरु की भावना तुम्हें अच्छा बनाने की रहती है इसलिए कहा जाता है कि विद्यार्थी कुंभ के समान होता है वह, तभी सुंदर बनता है। जब उसे ठोक-पीट कर उसकी कमियाँ दूरकर उसे सुंदर रूप दिया जाता है। इसी प्रकार विद्यार्थी को सुंदर और नेक बनाने के लिये दण्ड देते हैं। गुरु की बात न मानने से बच्चे बिगड़ जाते हैं, व्यसनों में फँस जाते हैं। अत: हमें गुरुओं की बात माननी चाहिए। उनकी विनय पालनी चाहिए।

भगवान महावीर का जन्म बिहार प्रान्त के कुण्डनगर (कुण्डलपुर) वैशाली में हुआ था। इनकी माता त्रिशलादेवी व पिता राजा सिद्धार्थ थे। वे बहुत महान थे। इनकी जैन जाति 'नाथ वंश' की थी, व क्षत्रिय कुल था। इनके नाना चेटक राजा थे। इन्होंने अपने जीवन में बहुत कुछ ऐसे कार्य किये, जो सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। इनका शरीर 7 हाथ ऊँचा व आयु 72 वर्ष की थी। स्वर्ण के समान, पीला रंग था। भगवान महावीर 30 वर्ष तक बालब्रह्मचारी बनकर घर में रहे और सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था का अनुभव ग्रहण किया फिर वैराग्य को प्राप्त किया। संसार की असारता का ज्ञान करके उन्होंने दिगम्बरी दीक्षा धारण कर ली और मुनि बन गये और 12 वर्ष तक जंगल में रहकर घोर तपश्चरण किया। जब उन्हें केवलज्ञान हुआ तो देवों ने आकर उनकी विशेष कल्याणक रूप पूजा की और विशाल रूप समवशरण की रचना की। 30 वर्ष तक उनका समवशरण भारत वर्ष

में भ्रमण करता रहा। कई लोगों ने दीक्षा लेकर मोक्ष का मार्ग अपनाया।

इस देश में कई बड़े-बड़े यज्ञ कार्य चल रहे थे हिंसा के कार्य हो रहे थे। यज्ञ जो चल रहे थे उनमें पशुओं की बलि दी जाती थी। उस समय देश के सभी लोगों ने कहा- ''वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।'' तो उस समय ऐसे वर्धमान स्वामी का जन्म हुआ। जब भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने जो उपदेश दिया। उनके उस उपदेश को सुनकर सभी हिंसक यज्ञ बंद हो गये और इन्द्रभूति गौतम जैसे लोगों ने 500 शिष्यों के साथ उनके पास दीक्षा धारण कर ली और समवसरण में गणधर बने।

महावीर का जीवन बचपन से ही महान था। एक बार जब इन्द्र ने उनके दाहिने पैर के अंगूठे में सिंह का चिह्न देखा तो उनका नाम वर्द्धमान रख दिया। एक बार जब वे खेल रहे थे तो खेलते-खेलते वहाँ एक बड़ा भयंकर अजगर सर्प आ गया। सभी बच्चे डरकर भाग गये परंतु वे निडर होकर उस सर्प के फण पर बैठ गये तो सभी ने कहा कि ये तो वीर हैं, ये तो वीर हैं। एक बार जब एक हाथी मदोन्मत्त होकर पागल-सा होकर घूम रहा था, सभी लोगों को परेशान कर रहा था। सभी तो डरकर भागने लगे परंतु उन तीर्थंकर ने बालक अवस्था में ही उस हाथी को रोक दिया और उसकी पीठ पर बैठ गये तब उनका नाम अतिवीर हुआ। जब वे बचपन में क्रीड़ा कर रहे थे तब एक बार दो मुनियों ने आकाश मार्ग से उन्हें तीर्थंकर के रूप में देख लिया अत: मुनियों की शंका समाधान होने से उन्होंने उनका नाम सन्मति दे दिया। और एक बार जब मुनि दीक्षा के बाद वे ध्यान में लीन थे तो लोगों ने उनके ऊपर कई उपसर्ग किये, अप्सराओं ने नृत्यगान किये परंतु वे आत्म ध्यान में लीन रहे और अपने ध्यान से नहीं डिगे। तब सबने कहा कि ये तो पर्वत के समान अटल हैं, ये तो महावीर हैं। ऐसे हैं हमारे तीर्थंकर भगवान महावीर, जिन्होंने 30 वर्ष तक अहिंसा का शंखनाद किया।

23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान के करीब 250 वर्ष बाद भगवान महावीर हुये। आज से लगभग 2617 वर्ष पहले उनका जन्म हुआ, जिसे हम महावीर जयन्ती के रूप में मनाते हैं। भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर होकर पावापुर (विहार) से मोक्ष पा-सिद्ध लोक को गये। इसी खुशी में उस दिन प्रात: निर्वाण लाड़ू चढ़ाया जाता है और इसी दिन इन्द्रभूति गौतम गणधर को संध्या के समय केवलज्ञान की प्राप्ति हुई अत: सभी सायं में केवलज्ञान के दीप जलाते हैं और दीपावली मनाते हैं।

20 वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत भगवान के काल में एक महापुरुष हुये, जिनका नाम राम है। राम का बड़ा ही आदर्श जीवन था, उन्होंने अपने जीवन में बहुत ही उपकार के कार्य किये हैं। हम सभी जानते हैं कि 13 वर्ष के वनवास के लिए जंगल में गये थे। वे जंगल में एक कुटिया बनाकर रहते थे, दण्डकारण्य में।

एक बार रावण ने रामनाम की चादर ओढ़ करके सीता का हरण किया। पहले तो वह एक मृग का (हिरण) का रूप लेकर के आया। वह दिखने में बहुत ही सुंदर था। सीता को बहुत अच्छा लगा। सीता ने राम से कहा कि ये तो मुझे चाहिए। राम उस मृग के पीछे-पीछे भागे और उसे पकड़ने की कोशिश की। राम ने कहा कि यह तो बहुत पास है, हम उसे पकड़ लेंगे। परंतु जैसे ही राम उसके पास आते वह और दूर भागता। ऐसे संदर्भ में राम उसे पकड़ने के मोह में एक बहुत बड़े घने जंगल में पहुँच गये। लक्ष्मण देखने जाते हैं कि हमारे भाई राम अभी तक क्यों नहीं आए हैं ? लक्ष्मण अपनी भाभी सीता से कह कर जाते हैं कि आप कुटिया के बाहर नहीं

निकलना; कहीं ऐसा न हो कि कोई छली व्यक्ति आये और आपको ले जाये। उन्हें पहले से ही आभास सा हो गया था। लक्ष्मण ने कुटिया के बाहर अपने बाण से एक रेखा खींच दी (जिसे लक्ष्मण रेखा बोलते हैं।) जो इसके अंदर आयेगा, आग जल उठेगी भस्म हो जायेगा। ऐसा करके लक्ष्मण, राम को खोजने हेतु चले जाते हैं।

राम तो बहुत दूर चले गये थे मिल ही नहीं पा रहे थे। उतने में वह हिरण आकाश में उड़ जाता है तो सोचा कि अरे ये क्या! ये कोई हिरण नहीं, ये तो कोई छली व्यक्ति है। उन्होंने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि परिवार में कोई बाधा आ जाये। जब वे राम वापस आते हैं तो रास्ता ही भूल जाते हैं। चूँकि कुटिया में सीता अकेली थीं तो लक्ष्मण भी कुटिया की ओर वापस आने लगते हैं।

एक व्यक्ति रामनाम की चादर ओढ़कर आया। राम-राम भज रहा था और बोल रहा था-भिक्षाम् देहि, भिक्षाम् देहि। सीता ने सोचा कोई भूखा साधु आया है चलो इसे भिक्षा दे देते हैं। सीता बोली- आइए! पधारिए! बैठिये! भोजन कीजिए। वह कहता है कि नहीं-नहीं, मैं किसी के घर में प्रवेश नहीं करता। आपको बाहर आना होगा। सीता ने कहा नहीं! मैं बाहर नहीं आ सकती क्योंकि घर के लोग मुझे इंकार करके गये हैं कि सीमा को पार नहीं करना। साधु ने कहा- मैं किसी की कुटिया में नहीं जाता, जहाँ अकेली महिला हो वहाँ भी नहीं जाता। आपको भोजन देना हो तो दो, नहीं तो मैं वापस जाता हूँ। बाद में उसने एक पैर रखा परंतु आग जल गई और बोला कि नहीं अंदर नहीं आ सकता। फिर सीता को यह देखकर करूणा आ गई और वह कुटिया के बाहर आ गई। उसे भोजन दिया। परंतु वह तो विद्याधर था, उसने सीता को जबरदस्ती ही विमान में बिठाया और उसे लेकर आकाश में ले गया। वहाँ एक पक्षी था-जटायु (गिद्ध) पक्षी जिसके पंख, मुनि के चरणों के गंधोदक से स्वर्ण के समान हो गये थे। उसने सब हिंसा छोड़ दी थी। वह सीता का स्नेही उनकी रक्षा करता था। वह रावण के पास जाकर, सीता की रक्षा हेतु रावण को चोंच मारने लगा। परंतु रावण ने तलवार से उसका पंख काट दिया और वह नीचे गिर गया। वह अंतिम स्वासें ले रहा था। राम लौट ही रहे थे कि उन्होंने देखा कि ये क्या हो गया? लगता है कि कोई घटना घट गई। कुटिया को देखा तो खाली और जटायु की ये अवस्था हो गई। तुरंत उस पक्षी को णमोकार मंत्र सुनाया, प्रभु का नाम सुनाया और वह मरण करके स्वर्ग चला गया।

राम इधर-उधर, कंकड़-कंकड़, पत्तों-पत्तों से पूछ रहे थे कि मेरी सीता कहाँ गई? सीता कहाँ गई? इतने में आकाश से एक विमान निकला और उसमें बैठे विद्याधर ने देखा कि कोई व्यक्ति बहुत परेशान है, बहुत दु:खी है। वह नीचे आया और पूछा कि आप कौन हैं? परिचय दिया कि हम अयोध्या नगरी के राजा के पुत्र हैं, राज्य हमारे नाम पर ही चल रहा है। हम यहाँ वनवास पर आये हैं। हमारी पत्नी का किसी ने हरण कर लिया है। तो-उन्होंने कहा कि आप दु:खी न हों, हम पता लगायेंगे। वह जो विमान में आये थे वे थे- हनुमान। तुरंत ही वे विमान में बैठे और सीता का पता लगाते-लगाते लंका पहुँच गये। हनुमान तो राजा थे। वे राजा पवन कुमार-अंजना के पुत्र थे। परंतु उन्होंने जब लंका में प्रवेश किया तो बंदर का रूप ले लिया और वानर सेना बना ली जिससे कि रावण समझ न पाये। वे अशोक वाटिका में, एक पेड़ के नीचे, जहाँ सीता बैठी थी, वहाँ गये। सीता ने नियम लिया था कि जब तक राम का कोई संदेश नहीं मिल जाता तब तक हमारा उपवास रहेगा। सीता ने 10 दिन से आहार नहीं किया था। हनुमान वहाँ पहुँचे और सीता माता से बोले कि मैं राम के पास से आया हूँ और आपके

लिये संदेश लाया हूँ परंतु सीता को विश्वास नहीं हुआ। सोचा कि मैंने तो इनको कभी नहीं देखा, हनुमान ने उनकी मुद्रिका (अंगूठी) को दिखाया, फिर भी सीता को विश्वास नहीं हुआ। सीता ने कहा कि क्या आप राम का परिचय जानते हैं ? जानते हैं तो बताइए ? कैसे हैं राम ?

रामायण में लिखा है-

''ना मांसं राघवो भुङ्क्ते, न चैव मधु सेवते।
वन्यं सुविहितं नित्यं, भक्त-मश्नाति केवलं॥''

अर्थात् राजा-जैसे राम, कभी माँस का सेवन नहीं करते, कभी मधु का सेवन नहीं करते, वे तो शाकाहार करते हैं और जंगल में विहार करते हैं।

जैसे ही सीता ने, राम का ये परिचय सुना तो उनका हृदय कमल खिल गया और बहुत प्रसन्न हुईं और बोलीं- कि आप जानते हैं राम को। हनुमान के द्वारा लाये गये फल सीता के सामने रखे। उसमें तरह-तरह के फल थे जैसे-आम, केला, अंगूर, संतरा, रामफल भी रखा, जामफल भी रखा और एक फल और रखा जिसे सीता ने खूब पसंद किया, खूब खाया, तो उसका नाम सीताफल हो गया। लगता है दस दिनों के बाद सीता ने फलाहार किया।

हनुमान ने कहा कि आप चिंता न करें। हम आपको जल्दी ही यहाँ से लेकर जायेंगे। युद्ध करके हम ऐसे दुराचारी रावण को हरायेंगे। आप चिंता न करें।

ऐसे महान थे राम और हनुमान। युद्ध के समय उन्होंने एक पुल बनाया, जिसे रामसेतु कहते हैं। वह पुल आज भी समुद्र के अन्दर कन्याकुमारी के पास से लंका तक बना हुआ है। जब यह पुल बनाया जा रहा था तब लोग उस पर एक-एक पत्थर रख रहे थे, एक पर 'रा' और एक पर 'म' लिखते थे, तो वह जुड़कर के राम हो जाता था और तैर जाता था। राम ने सोचा कि मैं भी एक पत्थर रखूँ। चूंकि जगत के लोगों को शिक्षा मिलनी थी। तो राम ने जब पत्थर रखा तो वह समुद्र में डूब गया। तो सभी ने कहा कि देखो ! जिस पर भगवान का नाम नहीं होता वह संसार समुद्र में डूब जाता है। अर्थात् जो भगवान का नाम नहीं लेता वह संसार रूपी समुद्र में डूब जाता है। तो हमें अपने इष्ट भगवान का नाम अवश्य लेना चाहिए। सदैव भगवान का स्मरण करना चाहिए। राम भी अरिहंत, सिद्ध बनकर मोक्ष चले गये हैं।

सभी जैनी, हर रोज राम को इस तरह नमस्कार करते हैं; णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं। इसमें राम और हनुमान दोनों को नमोस्तु हो जाता है। क्योंकि वे परमेष्ठी बनकर मोक्ष पहुँच चुके हैं।

कहा करते हैं कि भगवान का नाम लेने से भगवान प्रसन्न हो जाया करते हैं परंतु भगवान तो प्रसन्न तब होंगे जब नाम लेने वाले का मुख शुद्ध होगा। अपने जीवन को अहिंसात्मक रखोगे। राम और हनुमान ने कभी माँसाहार नहीं किया तो वे यही चाहते हैं कि सभी शाकाहारी बनें, अहिंसा का पालन करें। इसी में उन्हें खुशी है।

मानव का भोजन शाकाहार है। शरीर की रचना भी शेर, कुत्ता, बिल्ली आदि माँसाहारी प्राणियों से भिन्न है। शाकाहारी के पेट में आँत बड़ी होती है परंतु माँसाहारी की छोटी होती है। माँसाहारी के दाँत नुकीले होते हैं, शाकाहारी के चपटे होते हैं। माँसाहारी जीभ से पानी पीता है परंतु शाकाहारी होंठों से पानी पीते हैं। अत: मानव

का भोजन शाकाहार है। शाकाहार में बहुत शक्ति है।

किसी मशीन में Horse Power (अश्वशक्ति) बोलते हैं, Lion Power नहीं बोलते। घोड़ा तो घास, चना आदि खाता है फिर भी इतनी शक्ति होती है। जब यदि घास खाने वाले घोड़े में इतनी शक्ति होती है तो मनुष्य तो सब्जियाँ, फल, दूध, धान्य आदि खाता है, तो क्या इससे शक्ति नहीं आयेगी ? खूब आयेगी।

अगर हमें राम को खुश करना है, हनुमान को खुश करना है और भगवान महावीर को खुश करना है तो कभी भी अण्डा मछली आदि रूप माँस का सेवन नहीं करना।

महात्मा गाँधी जब विदेश जा रहे थे तो उन्होंने माँ से जाने हेतु आज्ञा माँगी। परंतु माँ ने कहा- हम तो जाने की अनुमति नहीं देंगे, क्योंकि तुम्हें तो वहाँ माँस का सेवन करना पड़ेगा। फिर महात्मा गांधी बोले- "नहीं माँ नहीं, मर जाना पसंद करेंगे परंतु माँ हम माँस का कभी भी सेवन नहीं करेंगे।" विदेश में पहुँचने पर कई बार उन्हें शाकाहारी भोजन नहीं मिला तो उन्होंने उपवास कर लिया। लेकिन कभी भी माँसाहार नहीं किया।

जब वे विदेश से मित्रों के साथ वापस आये तो घर में प्रवेश करने लगे तो माँ ने कहा रुको-रुको। पहले बताओ कि तुमने माँस का सेवन तो नहीं किया। महात्मा गाँधी का सिर झुक गया और सोचा कि इतना करने पर भी माँ को मुझ पर शंका हो रही है। उनके साथी मित्र बोले- माँ! इन्होंने शाकाहार न मिलने पर उपवास कर लिया परंतु माँसाहार नहीं किया।

उन्होंने लिखा है कि देखो अगर कोई शराब की दुकान पर जाकर अगर दूध भी पिये तो लोग कहेंगे कि शराब पी रहा है। बुरी संगति में लोग बदनाम हो जाते हैं विदेश जाकर भी लोग बदनाम हो जाते हैं इसलिए यह सोचना कि विदेश नहीं जाना जबकि अपने देश की रक्षा करना है। विदेश जाकर लोग अपने देश को भूल जाते हैं, शाकाहार भूल जाते हैं। कई बार तो यदि माता-पिता का मरण भी हो जाये तो आ नहीं पाते। माता-पिता ने इतना बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया फिर भी हम माता-पिता को भूल गये। उनके उपकारों को भूल जाते हैं। अगर हम अपने देश में रहेंगे तो माता-पिता की भी रक्षा करेंगे और देश की भी रक्षा करेंगे। अपने देश की संस्कृति की रक्षा अपने देश में रहकर अपने देश में जन्में महापुरुषों के संदेशों का पालन करने में है।

सभी विद्यार्थियों को हिन्दी भी सीखनी चाहिए क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। मात्र इंग्लिश सीखने से ही काम नहीं होता, हिन्दी का भी हमारे जीवन में बहुत महत्व है। हमें अगर संस्कृति की रक्षा करना है तो हिन्दी और संस्कृत को जरूर सीखना चाहिए क्योंकि हमारे प्राचीन शास्त्र संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं।

विदेश में मैकाले ने सोचा कि- अगर देश को बदलना है, उसकी संस्कृति को बदलना है तो भारत में इंग्लिश मीडियम स्कूल शुरू करने होंगे, जिससे इस देश के लोग हिन्दी भूल जायेंगे और देश की संस्कृति भी भूल जायेंगे। तो यदि हमें देश की संस्कृति को बचाना है तो हमें हिन्दी के माध्यम से आगे बढ़ना चाहिए।

आजकल चमड़े का बहुतायत रूप से प्रयोग हो रहा है। जानते हैं ? चमड़ा कैसे मिलता है ? चमड़ा प्राप्त करने के लिये हजारों गायों को काटा जाता है फिर उनसे प्राप्त चमड़े से जूते, बैल्ट, पर्स आदि बनाये जाते हैं एवं उन गायों की चर्बी कई पदार्थों में मिलाई जाती है। उनके खून से नेलपॉलिश, लिपिस्टिक आदि बनाते हैं एवं उनकी हड्डियों का भी कई प्रकार के पावडर दन्त आदि पदार्थों में प्रयोग करते हैं। जो व्यक्ति चमड़े का प्रयोग

करेगा तो उसे कम से कम एक गाय को मारने का पाप लगेगा।''गाय तो गौमाता के समान है जिस घर में गाय होती है उस घर के लोगों को कैंसर नहीं होता है ऐसा लोग कहा करते हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि सभी संकल्प करें कि कोई भी चमड़े से निर्मित जूते, चप्पल, पर्स आदि का प्रयोग नहीं करेगा एवं बाजार में जो कुछ ऐसी खाद्य सामग्री जैसे-केक, पिज्जा, मैगी, बर्गर आदि ये सब गोमांस आदि से बनते हैं इसका भी कोई सेवन नहीं करेगा। Lays में भी सुअर की चर्बी मिलाई जाती है। अब ऐसे पदार्थों का कोई सेवन नहीं करेगा। किसी ने एक बार देखा कि किसी कारखाने में मुर्गी के बच्चे चूजे (करीब 5 लाख) एक मशीन में पिस रहे थे फिर उसमें कोई मीठा पदार्थ मिला करके, उसके पीस करके, पैकिंग करके चॉकलेट बना रहे थे। अत: जो बच्चा टॉफी खायेगा तो समझना कि माँस खा रहा है और अगले जन्म में उसे जैन कुल या अहिंसक कुल भी नहीं मिल पायेगा।

NET पर E-Number search करने से भी इन अशुद्ध पदार्थों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। तम्बाकू में एक पाइजन (जहर) होता है, जिसे निकोटिन कहते हैं। इसका सेवन करने से कैंसर होता है। ऐसे बीड़ी, सिगरेट तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों के सेवन से फैफड़े खराब होते हैं और गले में कैंसर होता है। ये सब खाने वालों को तो कैंसर होता है साथ ही, उनके पास बैठने वालों को भी कैंसर हो सकता है। अत: सभी बच्चे, शिक्षक और सामाजिक बंधु संकल्प करें कि भविष्य में ऐसे नशीले पदार्थों का सेवन कभी नहीं करेंगे। एक बार समाचार पत्र में भी पढ़ा था कि सिगरेट के धुएँ से भी कैंसर होता है। इसलिए आज सब संकल्प करो कि इसका सेवन नहीं करेंगे। तत्पश्चात् सभी बच्चों ने संकल्प लिया कि महाराजश्री! आपका प्रवचन हम सब लोगों को बहुत अच्छा लगा। आपका आशीर्वाद हमारे जीवन को महान बनायेगा इसलिए आप हमें आशीर्वाद दीजिए। हम सब लोग अपनी शक्तिनुसार हिंसक वस्तुओं का सेवन नहीं करेंगे तथा मादक वस्तुओं का सेवन नहीं करेंगे, माता-पिता की सेवा करेंगे और अहिंसक सच्चे देवी-देवता के सिद्धांतों को मानेंगे।

इस प्रकार नियमों का पालन करते हुए सभी लोग इसी भावना के साथ हनुमान, राम और महावीर जैसे बनें ऐसा मेरा आशीर्वाद है। अंत में यही कहता हूँ कि-

धर्म जैन हो या हिन्दु हो, चाहे हो सिख ईसाई।
मुस्लिम बौद्ध सभी में देखो! नहीं कही हिंसा भाई॥
सभी धर्म जो दया मूल है, उसकी बात बताते हैं।
नहीं मारना किसी जीव को, यही सबक सिखलाते हैं॥

महावीर भगवान की जय।

मरण जीतना है सल्लेखना -आचार्यश्री आर्जवसागरजी

भगवान महावीर का मार्ग समाधि से मरने की कला सिखलाता है। जिसने एक बार भी उस उत्तम मरने की कला अर्थात् सल्लेखना समाधिमरण का ज्ञान कर और विधिवत् समाधिमरण को धारण किया तो ''उक्कट्टेण दो तिण्णि भव गहणाणि, जहण्णेण सत्तट्ठ भव गहणाणि'' उत्कृष्ट से दो-तीन भवों में या जघन्य से सात आठ भवों में नियम से मोक्ष का भाजक होता है। सल्लेखना प्रतिकार रहित उपसर्ग, दुष्काल, बुढ़ापा और रोग के उपस्थित होने पर धारण की जाती है ऐसा आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने अपने प्रवचन में बताया।

आत्म साधना का फल क्या?

(70 वर्षों से ऊपर के धर्म-स्नेही बन्धुओं के लिए गम्भीरता से विचारणीय 8 बिन्दु)

-प्रवचनांश-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

इस दुर्लभ नरभव को पाकर क्या हमने आत्मकल्याण का लक्ष्य बनाया है ? नहीं बनाया हो तो अब शीघ्र बनाकर इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। अचानक लक्ष्य प्राप्ति के पूर्व देहावसान भी हो जाए तो उसके लिए अगली पर्याय में अवश्य सुविधा व अवसर की प्राप्ति होगी।

भावार्थ के रूप में सर्व साधकों के लिए निम्न बिन्दु विचारणीय हैं:-

1. इस बहुमूल्य पर्याय का कितना समय और बचा है (अनुमानकर विचारणीय है) ?
2. शरीर किस प्रकार शिथिल होता जा रहा है ?
3. चित्त की चंचलता किस प्रकार समाप्त कर आत्म-बल बढ़ाया जाए ?
4. बीमारी तथा वृद्धावस्था के समय के बाद आत्मसाधना के लिए कितना समय हमारे पास बचा है ?
5. अब तक हमने जितना भी शास्त्रज्ञान प्राप्त किया है- क्या वह हमारे आत्मकल्याण के लिए पर्याप्त नहीं है ?
6. अब शास्त्रज्ञानवर्धन के लिए कितना समय और सामर्थ्य हमारे पास बचा है ?
7. मोह बन्धन (परिवार, भूमि, फण्ड और संस्था विशेष से) ढीला पड़ जाए-क्या इस प्रकार का प्रयास करने का समय-अब नहीं आ गया है ?
8. घर परिवार से दूर किसी अच्छे क्षेत्र पर सत्संगति में रहने का समय अब आया कि नहीं ?

इस प्रकार गम्भीरतापूर्वक विचार कर अपनी अधूरी पारिवारिक तथा सामाजिक संस्था आदिक की जिम्मेदारियां पूरी कर नये सिरे से जीवन प्रारंभ कर देना चाहिए। जिस प्रकार से हम सल्लेखना के निमित्त एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक संघ से दूसरा संघ या एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए तैयारी करते हैं, उसी प्रकार इस पर्याय को छोड़कर अगली पर्याय में जाने की तैयारी करने का अब समय आ गया है। इति शुभम् ।

संकलन:-सम्पत लाल छाबड़ा 98930647854

★

रत्नत्रय का स्वरूप समझें

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आचार्य आर्जवसागरजी ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिन सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक् चारित्र को धर्म शास्त्रों में रत्नत्रय धर्म के नाम से पुकारा गया है तथा जिनकी समष्टी (एकता) का नाम मोक्षमार्ग कहा गया है, मोक्ष रूपी मंजिल की प्राप्ति हेतु जिस मार्ग की अति आवश्यकता होती है क्योंकि बिना मार्ग के मंजिल की प्राप्ति नहीं होती। अत: मोक्ष मंजिल पाने हेतु ऐसे उन सम्यग्दर्शनादि रूप रत्नत्रय या त्याग, संयम रूप मोक्षमार्ग को अंगीकार करना बहुत आवश्यक है।

शाहपुर नगर में हुये ऐतिहासिक कार्यक्रम

परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के शाहपुर (सागर) में ग्रीष्मकालीन प्रवास के दौरान कई ऐतिहासिक कार्यक्रम हुये। जिसमें सूरत निवासी ब्र.श्री सुरेखा बेन ने आर्यिका दीक्षा हेतु आ. आर्जवसागरजी से कई बार निवेदन किया और शाहपुर में पुन: निवेदन करने पर उनकी दीक्षा का कार्यक्रम 16.04.18 तारीख को रखा गया। 14 तारीख को पूरे शाहपुर नगर की ओर से गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और 15 तारीख को शाम को बेंड-बाजे के साथ बग्गि में इनकी विनोली निकाली गई। रात को सूरत से पधारे पारिवारिकजनों के द्वारा गोद भराई की गयी। पश्चात् 16 तारीख को प्रात: 5 बजे से उन्होंने केशलोंच प्रारंभ किया। 7:30 बजे बेंड बाजे के साथ बग्गि में दीक्षार्थी को बिठाकर पूरी समाज के साथ जुलूस आचार्यश्री विद्यासागर स्कूल प्रांगण में बने पाण्डाल तक पहुँचा। वहाँ पर शाहपुर पाठशाला के बच्चों के द्वारा एवं बड़ी बहिनों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दीक्षार्थी ने गुरुवर से दीक्षा हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया तथा अपनी वैराग्य परम वैराग्य भरी भावना व्यक्त की। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त बाहर से पधारे सूरत, तमिलनाडू, भोपाल, दमोह, पथरिया, सागर, दिल्ली आदि के लोगों का सम्मान किया गया। पश्चात् आर्यिका दीक्षा विधि प्रारम्भ हुई। आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ने उन पर पूर्ण आर्यिका दीक्षा विधि अपने ससंघ समक्ष अपने कर कमलों से करके एवं संघस्थ आर्यिका प्रतिभामति माताजी से भी श्रीकार वगैरह की कुछ विधि सम्पन्न करवायी तथा अंत में उनका नामकरण आर्यिका श्री 105 सुयोगमति माताजी किया गया। नई पिच्छिका कमण्डल व शास्त्र दान देने का सौभाग्य सूरत से पधारे पूर्व पर्याय के परिवार वालों ने प्राप्त किया। अन्त में गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। ऐसे वैराग्यवर्धक दीक्षा के कार्यक्रम को शाहपुर नगर के लोगों को पहली बार देखने को मिला। अत: समाज के लोगों ने बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह दीक्षा का दृश्य देखकर हरा-भरा परिवार होते हुए भी कैसे वैराग्य धारकर उसका त्याग कर दिया। यह विचार कर लोगों के अन्दर भी वैराग्य का, त्याग का भाव उत्कट हुआ। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस ग्रीष्मकालीन वाचना में प्रात:कालीन प्रवचन शृंखला में सम्यक्ध्यान पर प्रवचन व समाधितंत्र, तत्त्वसार आदि ग्रंथ पढ़ाया गया। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा व आचार्यश्री आर्जवसागरजी के रचित तीर्थोदयकाव्य की वाचना तथा शाम को जीवन संस्कार के साथ स्तुति, स्तोत्र पाठ का अर्थ आदि कार्यक्रम आर्यिका प्रतिभामतिजी द्वारा किया गया। रविवारीय प्रवचनों में मुनिश्री 108 महत्सागरजी के भी प्रवचन हुये एवं उन्होंने श्रावकों को स्तुति पाठ आदि का अर्थ समझाया।

इसी बीच दिनांक 12 मई से 19 मई तक आ. आर्जवसागरजी ससंघ सान्निध्य में आशीर्वाद और प्रेरणा से ''सर्वोदय सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया। जिसमें प्रात: अभिषेक पूजन के पश्चात् 7:30 बजे आचार्यश्री द्वारा द्रव्य संग्रह तथा दोपहर में आर्यिका प्रतिभामति द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं बाहर से पधारी बहिनों द्वारा छहढाला और शाम को गुरुभक्ति व आचार्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका कृति तथा आर्यिका संघ द्वारा जीवन संस्कार तथा रात्रि में ब्र. बहिनों द्वारा रत्नकरण्डक श्रावकाचार की कक्षायें चलीं। जिसमें शाहपुर के

बाल, युवा, वृद्ध आदि सभी ने उत्साह पूर्वक लाभ लिया। 19 मई को परीक्षायें हुईं 20 मई को दोपहर में परीक्षा में उत्तीर्ण हुये लोगों को प्रमाण पत्र व पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। पश्चात् गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। समाज के लोगों ने श्रुतपञ्चमी पर्व व चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। 9 जून को श्री भक्तामर का पाठ 24 घंटे का (अखण्ड पाठ) रखा गया। दूसरे दिन संगीतमय भक्तामर विधान भी हुआ और 12 जून को प्रात: श्री शान्तिनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक भी लाडू चढ़ाकर श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान भक्ति पूर्वक मनाया गया। 18 जून को श्रुतपञ्चमी पर्व शास्त्र (जिनवाणी) की पूजन व शास्त्र शोभायात्रा (पालकी) निकालकर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता एवं चित्रकला प्रतियोगिता भी की गयी तथा अन्त में गुरुवर के मंगलप्रवचन श्रुत पञ्चमी महत्त्व पर सम्पन्न हुये। इस प्रकार शाहपुर नगर में आ.गुरुवर आर्जवसागरजी के सान्निध्य में कई मंगलमय कार्यक्रम सम्पन्न हुये। सबसे बड़ी उपलब्धि शाहपुर में आचार्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तर मालिका एवं तत्त्वसार के पद्यानुवाद रचने रूप रही।

सुबह का भूला शाम को वापस आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते - आचार्य श्री विद्यासागर जी

आचार्यश्री ने एक दृष्टांत के माध्यम से बताया कि एक पिता अपने बेटे को सही राह (धर्म मार्ग) बताता है परन्तु बेटे को पिता की बात कम समझ में आती है वह केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रयत्न करता है और उसमें सफलता भी प्राप्त करता है । जब उसके पास उसकी इच्छा अनुरूप सभी साधन और सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं तो वह बैठा सोचता है कि उसके पास आज सभी चीजें जो वो अपनी जिन्दगी में चाहता है उसके पास उपलब्ध हैं किन्तु मन मान नहीं रहा है तब उसे अपने पिता की बात याद आती है और वह अगले दिन देश वापस आता है और अपने देश की मिट्टी को माथे से लगाता है और फिर अपने पिता से मिलता है । पिता उसे देखकर खुश हो जाते हैं और एक पिता अपने बेटे के कार्यानुसार उसके भविष्य को अच्छी तरह जानता है । उन्हें मालूम था की एक दिन उनका बेटा सही राह (धर्म की राह) पर जरूर आएगा । यहाँ पर एक वाक्य चरितार्थ होता है की ''सुबह का भूला शाम को लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते'' । आज चंद्रगिरी में भी जगदलपुर से आप लोग देव बनकर आये हैं हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आप लोग अपनी मातृभूमि से जुड़े हुए हैं । प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभूमि से हमेशा जुड़े रहना चाहिये जिससे कि उसके संस्कार हमेशा बने रहे । जगदलपुर में पंचकल्याणक की भूमिका डोंगरगांव में मात्र एक दिन में बनी थी यह वहाँ के लोगों का पुण्य है और उनका प्रयास भी सराहनीय है जो इतना बड़ा कार्य कर रहे हैं । जगदलपुर एक आदिवासी इलाका है वहाँ जिन मंदिर होना अपने आप में एक अलग बात है इससे वहाँ के आस - पास के लोग भी जुड़ सकेंगे जैसे कोंडागांव, गीदम आदि । यह एक आदिवासी बहुल क्षेत्र प्रकृति की गोद में है जो कि अपने आप में एक प्राकृतिक सुन्दरता धारण किये हुए है।

भाव-विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

१. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।

2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।

3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।

4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।

6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।

7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।

8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।

9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, ८५, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-८ एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**
प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य
तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

मार्च 2018

प्रथम श्रेणी
श्री सुरेश जैन त्रिमूर्ती,
540, सुदामा नगर, जैन मन्दिर के पास
इन्दौर-452009 (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी
श्रीमती मिथिलेश वीरेन्द्र जैन
एफ-42, संजय काम्पलैक्स जयेन्द्रगंज,
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)474009

तृतीय श्रेणी
श्रीमती सरिता बजाज,
एच-18, फेस- I, स्टींलिंग ग्रीन व्यू,
चूनाभट्टी, भोपाल

उत्तर पुस्तिका मार्च 2018

1. श्री विजयराज 2. श्रावण शुक्ला 6 3. $2\frac{1}{2}$ योजन
4. पशुबंधन का दृश्य 5. हाँ 6. हाँ
7. हाँ 8. हाँ 9. श्रीकृष्ण
10. बरदत्तजी 11. राजमति
12. भ. नेमिनाथ के विवाह पर सब लोग विवाह की तैयारी में व्यस्त हो गये थे। पशुशाला में बंधे पशुओं के खान-पान पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे। इसलिए वे पशु बंधन में बँधे भूखे-प्यासे चीख रहे थे न कि म्लेच्छखंड वालों के मांस के लिए रखे थे।
13. सम्मेदशिखरजी 14. गिरनारजी 15. शत्रुंजयजी
16. तारंगाजी 17. सही 18. गलत
19. गलत 20. गलत

भाव-विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

- ❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. भ. पार्श्वनाथ की आयु कितनी थी ?

100 वर्ष ( )   72 वर्ष ( )   120 वर्ष ( )

प्र.2. भ. महावीर की शरीर की ऊँचाई कितनी थी ?

9 हाथ ( )   7 हाथ ( )   6 हाथ ( )

प्र.3. भ. पार्श्वनाथ ने कितने उपवास के साथ दीक्षा ली थी ?

2 उपवास ( )   एक उपवास ( )   3 उपवास ( )

प्र.4. भ. महावीर के काल में हुये कामदेव का नाम क्या था ?

श्रीपाल ( )   वसुदेव ( )   नागकुमार ( )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. भ. पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष तक राज्य किया। ( )

प्र.6. भ. पार्श्वनाथ का जन्म नेमिनाथ के 83,750 वर्ष काल बीतने पर हुआ। ( )

प्र.7. भ. महावरर को 42 वर्ष में केवलज्ञान हुआ। ( )

प्र.8. भ. महावीर के जीव ने सिंह की पर्याय में व्रत धारण किया था। ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

प्र.9. भ. पार्श्वनाथ की दीक्षा तिथि .... थी।

(वैशाख कृष्णा 2, पौष कृष्णा 11, श्रावण शुक्ला 7)

प्र.10. भ. महावीर के समवसरण का विस्तार .... था।

($2\frac{1}{2}$ योजन, 2 योजन, 1 योजन)

प्र.11. भ.पार्श्वनाथ के समवसरण में प्रमुख गणधर .... थे।

(स्वयंभू, श्रीजय, सुप्रभजी)

दो पंक्तियों में उत्तर दें:-

प्र.12. भ.महावीर के समवसरण में प्रमुख श्रोता कौन थे और उन्होंने समवसरण में कितने प्रश्न पूछे थे ?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. भ. पार्श्वनाथ के प्रथम आहार दाता का नाम	-	कौशाम्बी
प्र.14. भ. पार्श्वनाथ के समवसरण में प्रमुख आर्यिका का नाम	-	चन्द्रप्रभा
प्र.15. भ. महावीर के दीक्षा पालकी का नाम	-	सुलोका
प्र.16. भ. महावीर के प्रथम आहार नगर का नाम	-	धन्य

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह बनाइये:-

प्र.17. भ.पार्श्वनाथ पार्श्वनाथ 38 मुनियों के साथ सम्मेदाचल से मोक्ष गये। ( )

प्र.18. भ. महावीर का समवसरण राजगृही नगर में तीन बार गया था। ( )

प्र.19. भ. पार्श्वनाथ के समवसरण में कुल सोलह हजार मुनिराज थे। ( )

प्र.20. जीवन्धर स्वामी भ. महावीर के काल में हुये। ( )

आधार

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... **उम्र** ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

❋❋❋❋❋ शिरोमणी संरक्षक ❋❋❋❋❋

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)।

❋❋❋❋ परम संरक्षक ❋❋❋❋

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

❋❋❋ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❋❋❋

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❋❋ पुण्यार्जक संरक्षक ❋❋

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❋ सम्मानीय संरक्षक ❋

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर** : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत** : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह)** : श्रीमती जैन उषा पदम मलैया।

❋ संरक्षक ❋

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली** : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● **भोपाल**: श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, श्री प्रेमचंद जैन ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर** : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह)** : श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल)।

❋ विशेष सदस्य ❋

● **दमोह** : श्री मनोज जैन दाल मिल, ● **अजमेर** : श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत** : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, डॉ. जैन संकेत मेहता ● **भोपाल**: श्री राजकुमार जैन।

❋ नवागत सदस्य ❋

● **बड़ोदा**: श्री पुष्पेन्द्र कुमार जैन, ● **शाहपुर (गणेशगंज)**: श्री राजेश कुमार जैन

सम्यग्ज्ञानभूषण तथा सिद्धांतभूषण उपाधि हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी... से **भाव विज्ञान पत्रिका** पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।
मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट:- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।
सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

अरविंदभाई गांधी, सूरत सम्मानित होते हुए।

हर्षदभाई मेहता, सूरत सम्मानित होते हुए।

दीक्षार्थी माताजी के परिवारजन (डॉ. संकेत मेहता, आदि सूरत) सम्मानित होते हुए।

शाहपुर में श्रुतपञ्चमी पर्व पर शास्त्र की शोभा में भक्तगण।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर शाहपुर में भाग लेने वालों का सम्मान।

श्रुतपञ्चमी पर्व पर मंगलाचरण करती हुई कन्यायें।

श्रुत की सज्जा कर जिन मंदिर लाते हुए पाठशाला के बच्चे।

श्रुतपञ्चमी पर्व पर सम्मानित होते हुए भक्तगण।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति द्वारा भाव-विज्ञान परीक्षा बोर्ड के अंतर्गत

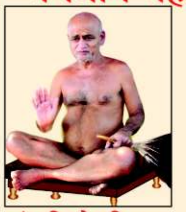
संत शिरोमणि
आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

एक अपूर्व स्वर्ण अवसर ; सम्यग्ज्ञान-भूषण पदवी (डिग्री)
एवं सिद्धान्त-भूषण उपाधि (डिग्री) हासिल करें

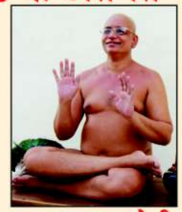
अध्यात्म योगी
आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

भव्य बन्धुओं! प. पू. आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भाव विज्ञान-परीक्षा बोर्ड द्वारा सितम्बर सन् 2018 से दो-दो वर्षीय पोस्टल कोर्स हेतु धार्मिक (चारों अनुयोगों से संबन्धित) प्रश्नोत्तरी एवं प्रश्न पत्र अपनी इसी भाव-विज्ञान पत्रिका से प्रकाशित किये जावेंगे जिसमें परीक्षा हेतु फार्म (आवेदन पत्र) भरने वाले पत्रिका के सदस्यों के अतिरिक्त भी आचरणवान भव्यगण, किसी भी उम्र के हों, भाग ले सकेंगे; जैसे एक ही गृह से माता, पिता, पुत्र, पुत्री और सभी परिजन। प्रश्नों के उत्तर स्वतः अपनी लिखावट में ही लिखें।

- सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धान्त-भूषण उपाधि प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र पत्रिका के अन्दर दिया गया है।
- इन उपाधियों को प्राप्त करने के लिये भाव-विज्ञान पत्रिका का सदस्य होना अनिवार्य नहीं है।
- परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्तव्यसन व मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
- भाव-विज्ञान (त्रैमासिक) पत्रिका द्वारा या पोस्टल से परीक्षा सामग्री प्राप्त होने के एक माह के अंदर उत्तर पुस्तिका पूर्ण शुद्धता और विनय के साथ भर कर अवश्य प्रेषित करें।
- उपाधि द्वय हेतु परीक्षार्थीगण अपना आवेदन पत्र हमारे पते पर ई-मेल अथवा रजिस्ट्री पोस्ट से प्रेषित करें:- bhav.vigyan@gmail.com **अथवा डॉ. अजित जैन, एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) मो.: 7222963457, 9425601161 को प्रेषित करें।**
- उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से इस पते पर प्रेषित की जानी चाहिये:- **डॉ. सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.) मो. 9425011357**

गोल्डन मोमेंटो

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण उपाधि सम्बन्धी उत्तीर्ण सूची में उच्चतर स्थान प्राप्त करने वाले भव्यगणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के माध्यम से प्रमाण पत्र के साथ गोल्डन मोमेंटो प्रदान कर ससम्मान पुरुस्कृत किया जाएगा।

समस्त जिनवाणी उपासकों एवं स्वाध्याय प्रेमियों से नम्र निवेदन है कि हमारे इस सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धान्त-भूषण उपाधि हेतु परीक्षा बोर्ड के कार्यक्रम की जानकारी को सर्वत्र अपनी हरेक सुविधाओं के साथ प्रचार-प्रसार करने का उत्साह पूर्वक पुरुषार्थ करें। **धन्यवाद।**

सम्पादक- डॉ. अजित जैन, भोपाल

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
राजेन्द्र जैन	**अरविन्द जैन,** सागर	**पवन जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन',** दमोह	**इंजी. महेन्द्र जैन**
9425140653	9893178458	9826240876	9425095917	9425601832

सदस्य -डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 0755-4902433, 9425601161